चतुर्थ अध्याय

उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी

व्यक्तित्त्व

जन्म एवं परिवार

परिवेश

समाज

साहित्यिक गतिविधियाँ एवं पुरस्कार

कृतित्त्व

उपन्यास

कहानी

निबन्ध एवं समालोचना

विविध

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

चतुर्थ अध्याय

उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी

व्यक्तित्व : कुमाऊँ क्षेत्र अनेक मनीषियों एवं साहित्यकारों की जन्मस्थली रहा है। प्रकृति का सुरम्य और शान्त वातावरण साहित्यकारों को अपनी ओर आकर्षित करता है। सुमित्रानन्दन पन्त, गोविन्द बल्लभ पन्त, शैलेश मटियानी, हिमांशु जोशी, शेखर जोशी आदि अनेक साहित्यकारों ने कूर्मांचल प्रदेश में जन्म लेकर साहित्य के ऊँचे शिखरों को छुआ है। इन्हीं साहित्यकारों में इलाचन्द्र जोशी भी हैं। विलक्षण प्रतिभा के धनी इलाचन्द्र जोशी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना, अनुवाद आदि सभी क्षेत्रों में जोशी जी ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

जोशी जी का जन्म 13 दिसम्बर सन् 1902 ई0 अर्थात मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि को संवत् 1856 में कुमाऊँ अंचल में स्थित अल्मोड़ा के एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता चन्द्रबल्लभ जोशी वन विभाग नैनीताल में कार्यरत थे। इनकी रूचि साहित्य, संगीत और कला में अत्यधिक थी। सितार और चित्रांकन में बहुत शौक रखते थे। चन्द्रबल्लभ जोशी जी के दो विवाह थे। पहली पत्नी से कोई सन्तान न होने के कारण इन्होंने दूसरा विवाह किया। लेकिन बाद में पहली पत्नी ने दो बच्चों को जन्म दिया, एक पुत्र लक्ष्मीदत्त जोशी तथा एक पुत्री लक्ष्मी देवी, दूसरी पत्नी लीलावती के पाँच पुत्र क्रमशः हेमचन्द्र जोशी, चारूचन्द्र जोशी, हरीशचन्द्र जोशी, इलाचन्द्र जोशी व अविनाश जोशी और तीन पुत्रियाँ दुर्गादेवी, मोहनी देवी, तितुली देवी थे। सबसे बड़े हेमचन्द्र जोशी थे। चन्द्रबल्लभ जोशी जी की रूचि अध्यापन में भी बहुत अधिक थी। इनके घर में एक पुस्तकालय था, जिसमें प्राचीन व नवीन सभी प्रकार की उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह था।

आपकी माताजी धार्मिक विचारों की एक आदर्श व कुशल महिला थी। जोशी जी के पालन–पोषण में उन्होंने कोई कसर नहीं की। जीवन में कठिन

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

परिस्थितियों का आपने संयम और धैर्य से सामना किया। 'गीता' का आपके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। धर्म–कर्म में आपका अत्यधिक विश्वास था। माताजी की धार्मिक प्रवृत्ति का जोशी जी पर अत्यन्त गहरा प्रभाव पड़ा। बचपन में ही रामायण, महाभारत आदि विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन से जोशी जी का धार्मिक विश्वास पुष्ट होता गया। इन्हीं महाकाव्यों की विभिन्न घटनाओं व कथाओं आदि से ही प्रेरणा लेकर आपने मानव–मन के विभिन्न रूपों का अध्ययन कर उन्हें विश्लेषित किया।

आपके बड़े भाई डॉ. हेमचन्द्र जोशी जी प्रसिद्ध भाषाविद् व विद्वान थे। नित्य नवीन पुस्तकें पढ़ने का उन्हें अत्यधिक शौक था। ज्योंही उन्हें पता चलता था कि अमुक पुस्तक बाजार में आयी है तो वे तुरन्त उसे खरीद लेते थे। इस प्रकार उनकी लाईब्रेरी में विश्व साहित्य की उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह हो गया। "आप कदाचित प्रथम भारतीय विद्वान थे, जिन्होंने यूरोप जाकर भाषा विज्ञान का सांगोपांग अध्ययन किया था।"[1] आपका मार्गदर्शन व प्रोत्साहन जोशी जी को हमेशा मिलता रहा।

परिवेश : पारिवारिक, धार्मिक व सामाजिक आस्थाओं का व्यक्ति के व्यक्तित्त्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है। संस्कारजन्य पारिवारिक वातावरण, आस्थावान धार्मिक प्रवृत्ति व स्नेहपूर्ण पहाड़ी समाज के फलस्वरूप एक विनम्र, परिश्रमी एवं प्रतिभाशाली साहित्यकार का जन्म हुआ। जोशी जी ने बचपन में ही रामायण, महाभारत, कुमारसंभवम्, रघुवंशम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम् आदि विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों का गहन अध्ययन कर लिया था। कीट्स, शैली, वड्सवर्थ, दोस्तोवस्की, चेखव, बंकिम चन्द्र चटर्जी, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि अनेक साहित्यकारों की विभिन्न रचनाओं का अध्ययन भी आपने कर लिया था। पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन तो आप नियमित रूप से किया करते थे। हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा पर आपका अच्छा अधिकार था।

---

1 'उत्तराखण्ड की विभूतियाँ' : शक्ति प्रसाद सकलानी

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सतत् अध्ययन से उनका बौद्धिक विकास तीव्र गति से हुआ। बचपन में ही आपने हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत का गहन अध्ययन कर लिया था। इसके अतिरिक्त जर्मन व फ्रेंच भाषा पर भी आपका अच्छा अधिकार था। कक्षा पाँच से ही आपने कविताएँ लिखना आरम्भ कर दिया था। सन् 1914 में रवीन्द्र नाथ टैगोर को नोबेल पुरस्कार मिलने पर जोशी जी उनसे काफी प्रभावित हुए और उन्हें लगा किया हिन्दी में भी उत्कृष्ट साहित्य की रचना की जा सकती है। उस समय हिन्दी में केवल 'सरस्वती' पत्रिका ही निकलती थी। जब जोशी जी कक्षा 7 में पढ़ते थे, उस समय इन्होंने 'सुधाकर' नामक एक हस्तलिखित पत्रिका निकाली, जिसमें कभी–कभी सुमित्रानन्दन पंत, गोविन्द बल्लभ पंत, हेमचन्द्र जोशी आदि लोग लिखते थे। उन्हीं दिनों जोशी जी ने अपनी प्रथम कहानी 'संजनगुप्ता' लिखी, जो उस समय 'गल्पमाला' नामक पत्रिका में निकली। इसके संरक्षक जयशंकर प्रसाद और सम्पादक अम्बिका दत्त व्यास जी थे। उन्होंने जोशी जी के इस प्रयास की सराहना की। सन् 1921 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आप अल्मोड़ा से भागकर शिमला चले गये।

जोशी जी शिमला के पहाड़ी वातावरण से अत्यधिक प्रभावित हुए। वहाँ के ऊँचे–ऊँचे देवदार के पेड़, पहाड़ी चोटियाँ व शीतल वातावरण जोशी जी की महत्त्वाकांक्षाओं को जाग्रत कर रहा था। शिमला में जोशी जी ने अनेक स्थानों पर नौकरी की सर्वप्रथम कालीन का व्यापार करने वाली अंग्रेजी कम्पनी में क्लर्क की नौकरी की। उसके बाद आर्मी हेडक्वाटर में भी कार्य किया, लेकिन जोशी जी का मन इन सब कामों में नहीं लगा। उनके सृजनशील मन में दबी अदम्य महत्त्वाकांक्षाएँ अनन्त विश्व में उड़ान भरने के लिए विकल हो रही थी। उनकी साहित्याकांक्षा की पूर्ति ऐसे में सम्भव नहीं थी, इसलिए जोशी जी कुछ समय बाद ही शिमला छोड़कर कलकत्ता चले गये।

कलकत्ता में जोशी जी ने सर्वप्रथम एक दैनिक समाचार पत्र 'कलकत्ता समाचार' में अनुवादक की नौकरी की। 1921 में ही वे अमर कथाशिल्पी शरतचन्द्र से मिले। धीरे–धीरे उनका परिचय मित्रता में परिवर्तित हो गया। इसी

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

घनिष्ठता में साहित्यकार के मन में साहित्यिक संस्कार पड़ते गये। शरत बाबू बड़े ही सहृदय मानव थे। वह व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना जानते थे। मानव हृदय की उन्हें परख थी। उन्होंने जोशी जी में दबे कलाकार को उभारा। 1929 में जोशी जी ने 'सुधा' नामक पत्रिका का सम्पादन किया। 'विश्वव्यापी' में भी आपने सम्पादन का कार्य किया। 1929 में जोशी जी का पहला उपन्यास 'घृणामयी' निकला। बाद में 'लज्जा' के नाम से उसका नवीन संस्करण निकला। 1932 में अपने बड़े भाई डॉ. हेमचन्द्र जी के साथ मिलकर 'विश्वामित्र' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इस पत्रिका में इनके कुछ उत्कृष्ट लेख निकले। इनका दूसरा प्रमुख उपन्यास 'संन्यासी' 6 माह तक धारावाहिक रूप में इस पत्रिका में छपता रहा, लेकिन बाद में किन्हीं कारणों से इस पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो गया।

1921 से लेकर 1940 तक का काल जोशी जी का संघर्ष का काल रहा। कई वर्षों तक बेकारी और अर्द्धबेकारी की अवस्था में रहे। जीवन की यथार्थ परिस्थितियों से जोशी जी का सामना कलकत्ता में ही हुआ। आजीविका के लिए कई वर्षों तक इधर–उधर भटकते रहे, फिर बड़े भाई के साथ मिलकर लाड्री खोली। समाज की उपेक्षाएँ और प्रताड़नाएँ सही। अनेक विषम परिस्थितियों से सामना हुआ, लेकिन जोशी जी ने ईमानदारी व धैर्य के साथ सब कुछ सहते रहे। सन् 1936 के आस–पास लाड्री को औने–पौने दामों में बेचकर प्रयाग आ गये।

इलाहाबाद में जोशी जी ने हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका 'सम्मेलन' में कार्य किया। 1940 में इनका प्रमुख उपन्यास 'संन्यासी' निकला। जिसके प्रकाशन से जोशी जी साहित्य जगत में प्रतिष्ठित हो गये। अपनी इस सफलता से जोशी जी अत्यधिक प्रेरित हुए और नवीन साहित्य लेखन की ओर अग्रसर हुए। 1947 में इन्होंने 'संगम' पत्रिका का सम्पादन किया। हिन्दी की प्रमुख साहित्यिक पत्रिका 'धर्मयुग' का सम्पादन भी किया। स्वतंत्रता के बाद जोशी जी को आकाशवाणी में नियुक्ति मिली। आकाशवाणी में कार्य करने के साथ–साथ आप साहित्य साधना

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

भी करते रहे। आकाशवाणी से सेवानिवृत्ति के पश्चात् निरन्तर साहित्य साधना में लग गये।

1979 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के तत्वाधान में आपको 'साहित्य वाचस्पति' सम्मान से अलंकृत किया गया। प्रशस्ति पत्र में कहा गया ".. .....इस सुदीर्घ साहित्य यात्रा की समर्चना के उपलक्ष्य में हिन्दी साहित्य सम्मेलन हिन्दी जगत की सर्वोच्च सम्मानित उपाधि 'साहित्य वाचस्पति' से अपने तेजोद्दीप्त यशोमण्डित मूर्धन्य साहित्यकार श्री जोशी जी को विभूषित करके स्वयं को गौरव का अनुभव करता है।"

13 दिसम्बर सन् 1982 को साहित्य का यह पूरोधा 80 वर्ष की आयु में पंचतत्व में विलीन हो गया।

समाज : किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्त्व के विकास में परिवार के बाद मुख्य रूप से जिसका प्रभाव पड़ता है वह है समाज। समाज की विभिन्न परम्पराओं, रीति–रिवाजों, मर्यादाओं आदि का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है। समाज में रहते हुए व्यक्ति को विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों व जटिल विषमताओं के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। ये सामाजिक परिस्थितियाँ कभी–कभी व्यक्ति के मार्ग में पग–पग पर अवरोध उत्पन्न करते हैं। समाज की ये जटिल और विषम परिस्थितियाँ ही उपन्यास रचना को जन्म देती हैं। क्योंकि उपन्यास साहित्य का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक जीवन एवं उसकी विभिन्न समस्याओं की व्याख्या करना ही है। प्रारम्भ में समाज में इन जटिल परिस्थितियों के अभाव के कारण उपन्यास साहित्य का अभाव था। इस सम्बन्ध में डॉ. गंगा प्रसाद पाण्डेय ने लिखा है– "भारत में उपन्यास लिखने की प्रथा पुरानी नहीं। तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक जीवन की सम–विषम परिस्थितियों द्वारा उपन्यास के स्वरूप का सर्वप्रथम ढाँचा बना।"[1]

---

1 'आधुनिक कथा साहित्य' : डॉ. गंगा प्रसाद पाण्डेय, पृष्ठ – 36

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

जन्म से युवावस्था तक इलाचन्द्र जोशी कुमाऊँ अंचल में रहे। कुमाऊँ के जनजीवन, संस्कृति व साहित्य ने इनके व्यक्तित्व विकास में समुचित योगदान दिया। जोशी जी जिस समाज में रहे, उसका प्रभाव उन पर और उनके साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक था। बचपन में ही विभिन्न साहित्यिक कृतियों के अध्ययन से जोशी जी ज्ञान भण्डार सुदृढ़ हो गया। यहीं से साहित्य की ओर उनकी रूचि बढ़ गयी। अल्मोड़ा के प्राकृतिक वातावरण में रहकर उन्हें प्रकृति के नवीन रूपों से परिचित होने का अवसर मिला। विभिन्न कहानियों व 'विजनवती' काव्य संग्रह में इसकी झलक देखी जा सकती है।

इलाचन्द्र जोशी आजीविका के लिए शिमला, कलकत्ता और इलाहाबाद आदि स्थानों में रहे। इन स्थानों में उन्होंने जिन विषम परिस्थितियों का सामना किया और समाज का जैसा उपेक्षापूर्ण व्यवहार उन्हें सहना पड़ा, इन सबका प्रभाव उनके साहित्य पर पड़ा। यहाँ की जीवन शैली, समाज, राजनीतिक परिस्थितियाँ, विभिन्न समस्याएँ आदि से वे पूर्णतः परिचित हुए। यहाँ के समाज में रहकर संघर्ष करते हुए उन्होंने अपने लेखकीय व्यक्तित्व को उभारा और यहाँ की जीवन्त तस्वीर अपने कथासाहित्य में चित्रित करने में सफल रहे। बचपन के संस्कारजन्य वातावरण का परिणाम था कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने ईमानदारी और धैर्य का साथ नहीं छोड़ा। इनका 'जहाज का पंछी' उपन्यास कलकत्ता के समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है।

साहित्यिक गतिविधियाँ एवं पुरस्कार : जोशी जी ने लेखन व सम्पादन दोनों ही क्षेत्रों में ख्याति अर्जित की। लेखन के क्षेत्र में आपने उपन्यास, कहानी, निबन्ध, समालोचना एवं अन्य विविध प्रकार के पुस्तकों की रचना की। 'लज्जा' ('घृणामयी' का नवीन संस्करण), 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'प्रेत और छाया', 'निर्वासित', 'मुक्तिपथ', 'सुबह के भूले', 'जिप्सी', 'जहाज का पंछी', 'ऋतुचक्र', 'भूत का भविष्य' एवं 'कवि की प्रेयसी' आपके प्रमुख उपन्यास हैं। आपके प्रमुख कहानी संग्रह 'धूपरेखा', 'दीवाली और होली', 'रोमाण्टिक छाया',

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'आहुति', 'खण्डहर की आत्माएँ', 'डायरी के नीरस पृष्ठ' एवं 'कटीले फूल लजीले कांटे' हैं। 'साहित्य सर्जना', 'विवेचना', 'विश्लेषण', 'साहित्य चिन्तन', 'शरत व्यक्ति और कलाकार', 'रवीन्द्रनाथ एवं 'देखा–परखा' आपके कहानी एवं समालोचनाएँ है। अन्य पुस्तकों में 'दैनिक जीवन में मनोविज्ञान', 'ऐतिहासिक कथाएँ', 'उपनिषदों की कथाएँ', 'गोर्की के संस्मरण', 'इक्कीस विदेशी उपन्यासकार', 'महापुरूषों की प्रेम कथाएँ' एवं 'सूदखोर की पत्नी' प्रमुख हैं। दोस्ता–एव्सकी की कहानियों का अनुवाद भी आपने किया। काव्य में आपका एकमात्र काव्य संग्रह 'विजनवती' है।

सम्पादन का प्रारम्भ हस्तलिखित पत्रिका 'सुधाकर' से हुआ। उस समय आप कक्षा सात में पढ़ते थे। उसक बाद साप्ताहिक तथा मासिक 'विश्वामित्र' (1932–1934), 'विश्ववाणी' (1935), 'संगम' (1947), 'धर्मयुग' (1950) आदि अनेक पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

पुरस्कार :

1955 में भारत सरकार की ओर से सर्वोच्च कृतिकार के रूप में 200 रूपये का पुरस्कार।

3 दिसम्बर 1972 को 'ज्योति शिक्षा, प्रयाग में अभिनन्दन किया गया।

1977 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया।

1979 में प्रयाग में 'साहित्य वाचस्पति' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कृतित्त्व : जोशी जी बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार थे। कक्षा पाँच से ही उन्होंने कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था। यद्यपि जोशी जी ने उपन्यास, कहानी, निबन्ध, समालोचना, अनुवाद, काव्य एवं सम्पादन सभी में लेखन का कार्य किया, लेकिन उन्हें ख्याति एक उपन्यासकार के रूप में मिली। इन्होंने

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

अपने उपन्यासों में मनोविश्लेषण को मुख्य आधार बनाया है। इसलिए इनका नाम मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकारों में प्रमुखता से लिया जाता है।

जोशी जी के सम्पूर्ण साहित्य का विवरण निम्नवत् है–

उपन्यास :

नाम	संस्करण का वर्ष	प्रकाशक
1. 'घृणामयी' (नवीन संस्करण 'लज्जा')	1929	भारतीय भण्डार, इलाहाबाद
2. 'संन्यासी'	1941	भारतीय भण्डार, इलाहाबाद
3. 'पर्दे की रानी'	1941	भारतीय भण्डार, इलाहाबाद
4. 'प्रेत और छाया'	1946	भारतीय भण्डार, इलाहाबाद
5. 'निर्वासित'	1946	भारतीय भण्डार, इलाहाबाद
6. 'मुक्तिपथ'	1950	भारतीय भण्डार, इलाहाबाद
7. 'सुबह के भूले'	1952	भारतीय भण्डार, इलाहाबाद
8. 'त्याग का भोग' ('जिप्सी' का नवीन संस्करण)	1952	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. 'जहाज का पंछी'	1955	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. 'ऋतुचक्र'	1969	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11. 'भूत का भविष्य'	1973	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
12. 'कवि की प्रेयसी'	1976	राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली

कहानी संग्रह :

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

1. 'धूपरेखा'	1938	
2. 'दीवाली और होली'	1942	सामयिक साहित्य सदन, लाहौर
3. 'रोमांटिक छाया'	1943	सामयिक साहित्य सदन, लाहौर
5. 'आहुति'	1945	नेशनल इंफार्मेशन एण्डपब्लिकेशन लि0, बम्बई
5. 'खण्डहर की आत्माएँ'	1946	सेतु प्रकाशन, झाँसी
6. 'डायरी के नीरस पृष्ठ'	1951	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. 'कंटीले फूल लजीले काँटे	1957	राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली

निबन्ध एवं समालोचना :

1. 'साहित्य सर्जना'	1938	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
2. 'विवेचना'	1943	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
3. 'विश्लेषण'	1952	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
4. 'साहित्य चिन्तन'	1954	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
5. 'शरत व्यक्ति और कलाकार'	1952	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
6. 'रवीन्द्रनाथ'	1955	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
7. देखा–परखा'	1957	राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
8. 'नए विचार नई दृष्टि'	1982	कनिष्क प्रकाशन, इलाहाबाद

विविध :

1. दैनिक जीवन और मनोविज्ञान'	1942	

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

2.	'उपनिषदों की कथाएँ'	1943	
3.	'गोर्की के संस्मरण'	1943	पुस्तकसदन ज्ञानवापी, बनारस–1
4.	'इक्कीस विदेशी उपन्यासकार'	1929	
5.	'महापुरूषों की प्रेम कथाएँ'	1954	कनिष्क प्रकाशन, इलाहाबाद
6.	'सूदखोर की पत्नी'	1954	

अनुवाद :

1. 'दोस्ता–एव्सकी की कहानियों का अनुवाद'

काव्य :

1. 'विजनवती'

उपन्यास :

लज्जा : 'घृणामयी' इलाचन्द्र जोशी जी का प्रथम उपन्यास है, जो 1927 में लिखा गया और 1929 में प्रकाशित हुआ। 'लज्जा' इसी उपन्यास का नवीन संस्करण है। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में कामग्रन्थि से पीड़ित लज्जा नामक नारी की कथा को चित्रित किया है। उपन्यास की नायिका लज्जा अपनी मर्मस्पर्शी कहानी को खुद ही समाज के सामने रखती है।

उपन्यास में दिखाया गया है कि लज्जा अपने छोटे भाई राजू अर्थात रंज्जन को बहुत प्यार करती है। वह सर्वसुख सम्पन्न परिवार से सम्बन्धित है। ऐश्वर्यपूर्ण लज्जा जब यौवन की दहलीज पर कदम रखती है तो डॉ. कन्हैयालाल से वह प्रथम मुलाकात में ही प्रेम करने लगती है। लेकिन राजू लज्जा व धूर्त कन्हैयालाल जैसे व्यक्ति के प्रेम को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। अनेक बार राजू लज्जा को कन्हैयालाल की गोद में लेटा हुआ देखता है।

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

इससे राजू के अन्तर्मन में कुण्ठा उत्पन्न होने लगती है, यही कुण्ठा अन्त में राजू की आत्महत्या का कारण बनती है।

लज्जा के मन में अपने किये गये कार्य के प्रति पश्चाताप होता है। अपने अतीत को याद करते हुए वह कहती है– "हाय! भाई बहनों के साथ आनन्द से हिलमिल कर रहने और निर्द्वन्द्व भाव से मुक्त विचरकर खेल–कूद करने के उन प्यारे दिनों को अतीत की कराल छाया कितनी निष्ठुरता के साथ हरण कर ले गई.............जान–बूझकर अपने प्यारे भाई की हत्या करके उसी की गुण–गाथा गाने का पाखंड रचती हूँ! कुछ भी हो आज अन्तिम बार अपनी निर्लज्ज कहानी समस्त संसार को मुझे सुनानी ही होगी।"[1]

लज्जा के मन में बाल सुलभ भय, विस्मय, हठ, हर्ष, कौतुहल आदि भावनाएँ विद्यमान हैं। यौवन की दहलीज पर आते ही नारी सुलभ प्रवृत्ति उसमें भी आ जाती है। वह डॉ. को रिझाने के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार है। "प्रत्येक नारी के हृदय में येन–केन प्रकार से पुरूष को रिझाने की प्रवृत्ति वर्तमान रहती है और मैं तो इसके लिए बर्बरता की चरम सीमा तक पहुँचने के लिए भी तैयार हूँ।"[2]

लज्जा के मन में काम की प्रबल भावना विद्यमान है। रात्रि में वह डॉ. साहब को अपने कमरे में ही रूकने का आग्रह करती है। डॉक्टर से घनिष्ठता होने पर वह अपने भाई राजू से दूर हो जाती है। वह डॉक्टर और अपने मध्य अपने भाई राजू को भी सहन नहीं करती है। राजू द्वारा डॉ. कन्हैयालाल की उपेक्षा किये जाने पर उसके मन में राजू से बदला लेने की प्रवृत्ति जन्म लेती है। "मैं राजू के अन्याय का बदला लेना चाहती थी; इसलिए प्रतिहिंसा के भाव से प्रेरित होकर तत्काल सम्मत हो गयी। जिस तरह राजू अधिक से अधिक जले अब में वही उपाय चाहती थी।"[3]

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 78

2 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 51

3 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 94

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

लज्जा का झुकाव डॉ. साहब के प्रति बढ़ता जाता है। वह घंटों डॉ. साहब से वार्तालाप करती है। उससे बातें करने में उसे मानसिक रूप से शान्ति मिलती है। जिस दिन डॉ. साहब नहीं आते हैं, उस दिन वह बेचैन रहती है। डॉ. साहब के प्रति किसी के आरोपों को वह सहन नहीं करती हैं कमलनी द्वारा डॉ. साहब के चरित्र के बारे में सुनकर वह बेचैन हो जाती है। राजू से वह अत्यधिक प्रेम करती है। राजू द्वारा अपनी उपेक्षा का कारण वह जानती है, लेकिन डॉ. साहब के आने पर वह उसके प्रेम मैं डूब जाती है।

लेखक ने एक ओर जहाँ वैभवपूर्ण परिस्थितियों में महलों में रहने वाली लज्जा की मर्मस्पर्शी कहानी का चित्रण किया है, वहीं दूसरी ओर झोपड़ी में निपट गरीबी में जीवन–यापन करने वाली माधवी की करूण कथा का वर्णन किया है, जो विधवा होने पर भी अपने पति की अर्थी के निकट जाकर उसके पाँव छूती है और अपनी माँ व बच्चों को धैर्य व ढाढस बँधाती है। लज्जा भी उसकी करूण दशा को देखकर वेदना से भर उठती है।

उपन्यास में लज्जा के साथ–साथ राजू का मनोविश्लेषण भी किया है। बचपन में ही उसे गम्भीर विषयों की किताबें पढ़ने का चस्का लग जाता है। उसमें सेवा व त्याग की भावना भी विद्यमान है। विधवा माधवी के प्रति उसकी दयालुता व सेवा–भाव की झलक मिलती है। स्वार्थी और चापलूसी से उसे घृणा है। डॉ. साहब से उसके घृणा का यही कारण है। वह अपने आप को चारों ओर से अकेला और असहाय पाता है। उसकी डायरी से पता चलता है– "मैं अकेला हूँ। मुझे जीवन का एक भी साथी कहीं कोई नहीं मिला। काका, अम्माँ और बहनों के साथ मेरे स्नेह–प्रेम का चक्र चल रहा है; पर क्या सचमुच हम लोग एक–दूसरे को प्यार करते हैं? मैं विश्वास नहीं कर सकता। सबको अपनी–अपनी जान प्यारी है, सब अपने–अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए जीवन धारण किए हैं।"[1] उपन्यास की प्रत्येक घटना पर मनोविज्ञान का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 146–147

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

विधवा माधवी के द्वारा लेखक ने भारतीय विधवा की करूण व यथार्थ स्थिति को चित्रित किया है।

संन्यासी : 'सन्यासी' 1941 में प्रकाशित जोशी जी का दूसरा उपन्यास है। इसी उपन्यास के द्वारा जोशी जी को हिन्दी साहित्य में उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठा मिली। इस उपन्यास में लेखक ने एक असाधारण व्यक्तित्व का मनोविश्लेषण कर उसके अन्तर्मन के विभिन्न मनोभावों को उद्घाटित किया है।

बनारस युनिवर्सिटी में एम0ए0 प्रीवियस का छात्र नन्दकिशोर शान्ति की ओर आकर्षित होता है। घनिष्ठता बढ़ने पर वह शान्ति को भगाकर इलाहाबाद ले जाता है। वहाँ कुछ दिन तक सही ढंग से गृहस्थी चलती है और इस दौरान शान्ति गर्भवती हो जाती है, लेकिन कुछ समय पश्चात् नन्दकिशोर का ईष्यालु मन शान्ति पर सन्देह करने लगता है। नन्दकिशोर के सन्देह व उसके बड़े भाई के भड़काने पर वह नन्दकिशोर को छोड़कर चली जाती है। नन्दकिशोर अपने भाई के साथ घर लौट आता हैं। वहाँ वह जयन्ती से विवाह करता है, लेकिन उसका ईर्ष्यालू स्वभाव जयन्ती पर भी सन्देह करने लगता है। जिसके फलस्वरूप जयन्ती आत्महत्या कर लेती है। नन्दकिशोर को इससे अत्यधिक दुःख पहुँचता है। कुछ समय पश्चात् बलदेव द्वारा शान्ति का पता चलने पर नन्दकिशोर उसके पास जाता है। शान्ति नन्दकिशोर के लड़के को उसे सौपकर दूर चली जाती है। अन्त में नन्दकिशोर संन्यासी का वेश रखकर कानपुर में मजदूरों के चक्कर में एक वर्ष की जेल की सजा पाता है।

सम्पूर्ण उपन्यास में लेखक ने नन्दकिशोर नामक व्यक्ति के वैचित्र्यपूर्ण जीवन को चित्रित किया है। लज्जा की भाँति उपन्यास का नायक अपनी अन्तरवेदना को पाठकों के सम्मुख रखता है। आगरा में जयन्ती से प्रथम परिचय में ही नन्दकिशोर भावमुग्ध हो जाता है– "मैं निपट अबोध बालक नहीं था। कोई युवती, किशोरी अथवा बालिका आज तक मैंने कहीं न देखी हो, यह बात भी नहीं। स्त्री–पुरूष के पारस्परिक आकर्षण की बात से मैं बिल्कुल अनभिज्ञ होऊँ,

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

ऐसा भी नहीं। पर मुझे आज यह अनुभव बिल्कुल नया और निराला जान पड़ता था।"[1]

नन्दकिशोर के मन में कामवासना की भावना प्रबल रूप से विद्यमान है। इलाहाबाद में शान्ति से प्रथम मुलाकात में ही नन्दकिशोर उसकी ओर आकर्षित होता है और उसकी रूद्र काम–वासना फूट पड़ती है। शान्ति से वार्तालाप नन्दकिशोर का किसी नवयौवना से पहला वार्तालाप था। धीरे–धीरे दोनों में घनिष्ठता बढ़ती जाती है और वे दोनों प्रतिदिन मिलने लगते हैं। यहाँ तक कि यदि वह किसी दिन शान्ति से नहीं मिल पाता है तो वह बेचैन हो जाता है– "शान्ति का आकर्षण मेरे अज्ञात में मेरे लिए ऐसा प्रबल हो उठा था कि यदि एक दिन भी उससे न मिल पाता तो ऐसा जान पड़ता जैसे एक महीना उसे बिना देखे बीत चुका है।"[2]

नन्दकिशोर में अहं की प्रवृत्ति विद्यमान है। इसकी झलक हमें इलाहाबाद में मिलती है। इलाहाबाद में बलदेव को देखकर शान्ति का मन वेदना से भर जाता है वह बलदेव के परिवार में रूचि लेने लगती है। ईष्यालु प्रवृत्ति का नन्दकिशोर शान्ति पर सन्देह करने लगता है। वह शान्ति से कहता है– "तुम मुझसे ऊबकर बलदेव को चाहने लगी हो।"[3]

शान्ति के द्वारा नन्दकिशोर को छोड़कर चले जाने के बाद भी नन्दकिशोर की ईष्यालु एवं अहंभाव की प्रवृत्ति नहीं छूटती है। शिमला में आकर जयन्ती से विवाह के पश्चात् कैलाशनाथ नामक युवक के सम्पर्क में आने पर वह जयन्ती और कैलाश पर सन्देह करता है। जयन्ती कहती है– "आप में अभिमान तो है ही, पर अहंभाव भी हद दर्जे तक है.....इस अहंभाव की तृप्ति के लिए आप चाहते हैं कि जिस स्त्री से आपका सम्बन्ध हो वह पूर्ण रूप से आपकी

---

1 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 9

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 31

3 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 120

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

होकर रहे, उसका मन, उसकी प्रत्येक वासना, प्रत्येक कामना, आपकी इच्छा की बलि हो जाय, उसके भीतर छिपी हुई कोई गुप्त से गुप्त प्रवृत्ति उसकी अपनी होकर न रहे; वह सब कुछ बिना किसी असमंजस के आपके पैरों में समर्पित कर दें।"[1] स्वाभिमानी जयन्ती नन्दकिशोर द्वारा अपमानित किए जाने पर आत्महत्या कर लेती है।

इस प्रकार जोशी जी ने नन्दकिशोर के माध्यम से एक असाधारण व्यक्तित्व का मनोविश्लेषण प्रस्तुत कर उसके अन्तर्जीवन के विभिन्न द्वन्द्वों का चित्रण का प्रयास किया है। जहाँ एक ओर लेखक ने शान्ति और जयन्ती के विशुद्ध प्रेम का वर्णन किया है, वहीं दूसरी ओर नन्दकिशोर के वासनामूलक प्रेम व अहं का चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त प्रेम–विवाह, पुरूष की अहंवादी प्रवृत्ति और नारी की करूणामय स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है।

पर्दे की रानी : 'पर्दे की रानी' 1941 में प्रकाशित जोशी जी का तीसरा उपन्यास है। इसमें लेखक ने मनोवैज्ञानिक, सामाजिक व आध्यात्मिक सिद्धान्तों की स्थापना का प्रयास किया है। उपन्यास में निरंजना का मनोविश्लेषण प्रस्तुत किया है। यद्यपि उपन्यास की मुख्य कथा निरंजना की जीवनी है, लेकिन शीला की कथा छोटी होने पर भी अत्यधिक प्रेमपूर्ण और मर्मस्पर्शी है।

उपन्यास की नायिका निरंजना बचपन में अपने पिता द्वारा अपनी माँ की हत्या करते देखती है। इससे उसके अवचेतन मन में एक अज्ञात ग्रन्थि उत्पन्न हो जाती है। वह मनमोहन के संरक्षण में रहती है। मनमोहन उससे अपनी वासना की पूर्ति चाहता है। मनमोहन का लड़का इन्द्रमोहन भी विदेश से लौटने के बाद निरंजना को पाना चाहता है, लेकिन निरंजना दोनों से ही अपने को बचाती है। कालेज की पढ़ाई के लिए वह हास्टल में भर्ती होती है। वहीं उसकी मित्रता शीला से होती है। कालेज छोड़ने के पाँच वर्ष बाद मंसूरी में जब

---

1 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 178–179

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

वह इन्द्रमोहन और शीला को देखती है। तो उसके अन्दर प्रतिहिंसा की भावना उत्पन्न होती है। निरंजना इन्द्रमोहन को अपनी ओर आकर्षित करती है। इन्द्रमोहन के अन्दर भी काम–ग्रन्थि प्रबल हो जाती है। वह निरंजना को पाने के लिए अपनी पत्नी शीला को जहर देकर मार देता है। नेपाल को जाते समय रेलगाड़ी में इन्द्रमोहन निरंजना का कौमार्य भंग करने के बाद उसे शीला की मृत्यु का रहस्य बताता है। इससे निरंजना के मन में उसके लिए घृणा की भावना उत्पन्न होती है। प्रेमाधिक्य के कारण इन्द्रमोहन रेलगाड़ी से कूदकर अपनी जान दे देता है। इन्द्रमोहन से प्रथम मिलन में निरंजना गर्भवती हो जाती है। इन्द्रमोहन की मृत्यु के बाद वह अपने सामाजिक गुरू के आदेश पर इन्द्रमोहन के बच्चे को अपनाकर मातृत्व के मंगलोन्मुखी पथ पर अग्रसर होती है।

लेखक ने कथा का आरम्भ निरंजना के हॉस्टल में भर्ती होने से किया है। निरंजना के रूप सौन्दर्य को देखकर सभी प्रभावित होते हैं। शीला भी उसके सौन्दर्य को देखकर उसके चरणों पर लोट–पोट होने की इच्छा रखती है। "न जाने किस अज्ञात चुम्बक शक्ति की प्रेरणा से मेरा प्रतिरक्तकण उस मोहनी मायाविनी के सैण्डलयुक्त चरणों पर भेंट चढ़ने के लिए पागल हो उठा।"[1] निरंजना के जीवन में अनेक उतार–चढ़ाव आते हैं। उसे हम एक दुःखी नारी के रूप में देखते हैं। सुख तो उसके लिए केवल कोरी कल्पना है। वह शीला से कहती है– "सुख केवल मोहमयी कल्पना है, दुःख जीवन के प्रतिपल का प्रत्यक्ष सत्य। सुख तरूण हृदयों के मंदिर उच्छवासों का केवल फेन है। दुःख उस फेन के नीचे की वास्तविक कटुता। प्रारम्भ में केवल फेन–ही–फेन दिखाई देता है। पर शीघ्र ही वह फेन विलीन हो जाता है, और नीचे का कड़वा पदार्थ अपना असली रंग दिखा कर स्थिरता प्राप्त कर लेता है।"[2]

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 8

2 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 18

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

उपन्यास में लेखक ने आत्मानुभूति के आधार पर उसकी आन्तरिक जटिलताओं का मनोविश्लेषण किया है। "जब मैं भावुकतापूर्ण स्वप्नों में पूर्णतया डूब कर अपने विगत बाल्यजीवन की मधुमय स्मृतियों को निचोड़–निचोड़ कर परम् अतृप्ति से उनका रसपान करती रहती थी। पर शीघ्र ही एक ऐसा विध्वंसक विस्फोट मेरे जीवन में हुआ, जिसने मेरे पिछले जीवन के सभी संस्मरणों को खण्ड–खण्ड और चकनाचूर करके बिखेर दिया और धूल के साथ एकाकार कर दिया।"[1]

अपने पिता द्वारा अपनी माँ की हत्या किये जाने पर निरंजना के अवचेतन मन में ग्रन्थि उत्पन्न हो जाती हैं उसके मन में समस्त पुरूष जाति के प्रति प्रतिहिंसा की भावना उत्पन्न होती है और जब मंसूरी में वह इन्द्रमोहन और शीला को देखती है, तो उसकी प्रतिहिंसा की भावना प्रबल हो उठती है– "समस्त पुरूष जाति के प्रति जो एक अव्यक्त प्रतिहिंसा का भाव इतने दिनों तक मेरे भीतर दबा पड़ा था वह फिर से जग उठने के चिन्ह प्रकट करने लगा।"[2]

निरंजना शीला से अत्यधिक प्रेम करती है। शीला के प्रति उसके मन में सहानुभूति है। वह इन्द्रमोहन से कहती है– "मैं शीला के प्रति एक सीमा तक अन्याय कर सकती हूँ। उस सीमा के आगे म¡ किसी भी हालत में नहीं जा सकती। शीला के प्रति मेरे हृदय में बराबर एक सच्चा सम्मान और सहृदय आत्मीयता का भाव वर्तमान रहा है।"[3]

इन्द्रमोहन में काम की प्रबल भावना है। वह निरंजना के कौमार्य को पाने के लिए शीला को विष देता है और निरंजना के कौमार्य को खण्डित करने में सफल हो जाता है। अन्त में प्रेमाधिक्य के कारण रेलगाड़ी से कूदकर आत्महत्या कर लेता है।

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 31

2 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 170

3 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 188

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

लेखक ने निरंजना की करूण कथा के साथ–साथ शीला की मर्मस्पर्शी कहानी का चित्रण भी किया है, जो इन्द्रमोहन द्वारा विष दिये जाने की बात को जानते हुए भी चुपचाप मृत्यु को गले लगा लेती है। निरंजना के अवचेतन मन में दबी विभिन्न ग्रन्थियों को उसके कुलगुरू दूर करते हैं। अन्त में लेखक ने निरंजना को गुरू के आदेश पर इन्द्रमोहन के बच्चे के लिए मातृत्व का पथ अपनाकर उसको मंगलोन्मुखी बना दिया है।

प्रेत और छाया : 'प्रेत और छाया' में जोशी जी ने व्यक्ति के कुण्ठाग्रस्त जीवन का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। उपन्यास की भूमिका में लेखक ने स्पष्ट किया है कि इस सम्पूर्ण विश्व मानव को परिचारित करने वाली विश्व मानव की एक अज्ञात चेतना है। उनके अनुसार "विश्व में तब तक अपेक्षाकृत (पूरी नहीं) शांति की स्थापना असंभव है जब तक मानव समाज अंतर्जीवन को उतना ही (बल्कि अधिक) महत्व नहीं देता जितना की वाह्य जीवन को .....मानवता के लिए सबसे कल्याणकर उपाय यह है कि वह अपनी उस अज्ञात चेतना के गहरे और अधिक गहरे, स्तरों में प्रवेश करके उसके भीतर जड़ जमाने वाली आदिकालीन पशु प्रवृत्तियों की छानबीन और विश्लेषण करें।"[1] उन प्रवृत्तियों को दबाने, अस्वीकार करने या अज्ञात रूप से विस्फोट होने देने से काम नहीं चलेगा। प्रेत और छाया में इन्हीं प्रवृत्तियों को उभारने का प्रयास किया गया है।

उपन्यास के नायक पारसनाथ के मन में उसके पिता द्वारा यह बात डाल दी जाती है कि वह पारसनाथ का पिता नहीं है। उसकी माँ का किसी वैद्य से सम्बन्ध था वह उसी का पुत्र है। इससे पारसनाथ के अवचेतन मन में समस्त नारी जाति के प्रति प्रतिहिंसा और प्रतिशोध की भावना उत्पन्न हो जाती है। वह सर्वप्रथम दार्जिलिंग में काँची से प्रेम करता है लेकिन विवाह की बात पर उसे छोड़कर भाग जाता है। इसके पश्चात् वह मंजरी के सम्पर्क में आता है और

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 9–10

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

उससे प्रेम करने लगता है। अंधी माँ की मृत्यु के बाद मंजरी पारसनाथ के साथ ही रहने लगती है। लेकिन कुछ समय बाद पारसनाथ भूजौरियाजी की पत्नी नंदनी, जिसको वह पेंटिग सिखाता था, की ओर आकर्षित होता है और मंजरी व उसके बच्चे को छोड़कर नंदिनी के साथ भागकर उसकी बहन हीरा के यहाँ चला जाता है। वहाँ नंदिनी की उपेक्षा से आहत होकर वह हीरा की ओर आकर्षित होता है। नंदिनी के अपमान का बदला लेने के लिए वह हीरा के गहनों की पोटली लेकर भागना चाहता है लेकिन उसी समय उसे अपने पिता का पुराना नौकर मिलता है। वह उसे उसके पिता के पास वापस ले जाता है। पिता द्वारा सच्चाई का पता चलने पर उसके मन की ग्रन्थि खुल जाती है और वह हीरा के साथ विवाह कर अंत में देशसेवा का व्रत लेता है। मंजरी बच्चे की मृत्यु के बाद डॉक्टर से विवाह कर लेती है।

उपन्यास में लेखक ने दिखाया है कि व्यक्ति के मन में किसी बात का ऐसा प्रभाव पड़ता है कि व्यक्ति की जीवन दिशा ही बदल जाती है। पारसनाथ के अवचेतन मन में उसके पिता द्वारा कही गयी बात का ऐसा ही प्रभाव पडता है, उसके मन में ग्रन्थि पैदा हो जाती है। सारी नारी जाति के प्रति उसमें प्रतिहिंसा की भावना भर जाती है। वह नारी को केवल काम–वासना तक ही सीमित मानता है। अनेक स्त्रियों के सम्पर्क में आने पर भी वह किसी से स्थायी सम्बन्ध नहीं बनाता। "व्यभिचारिणी माता और कपटी पिता ने जो सबक मुझे सिखाया है, उसका असर कहाँ जायेगा? मैं क्यों किसी स्त्री से स्थाई सम्बन्ध जोड़ूँ।"[1]

प्रतिशोध की प्रबल भावना के कारण ही उसे अपने पाशविक वृत्तियों से आनन्दानुभूति की प्राप्ति होती है। नंदिनी के पतिव्रता को खण्डित करके वह सोचना है– "किसी गुणवती और शीलवती सुंदरी स्त्री का पतिव्रत खण्डित करने से हम नरक के कीड़ों की सबसे बड़ी महत्वाकांक्षा की पूर्ति होती है; इसलिए

---

1 'प्रेत और छाया' : पृष्ठ – 45

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

आज मेरे नारकीय जीवन की चरम सफलता का दिन है, क्योंकि मैं केवल इस स्त्री का पतिव्रत खण्डित करने में ही सफल नहीं हुआ हूँ बल्कि वह आज हर तरह से मेरे अधीन है।"[1]

विजन रात्रि में जब मंजरी की अंधी माँ की मृत्यु हो जाती है, तो उसकी अव्यक्त छाया पारसनाथ के मन में बैठ जाती है। उसका मन हर समय एक अव्यक्त भय की भावना से भर जाता है। उसके मस्तिष्क में अनेक प्रकार की दुश्चिन्ताएँ उत्पन्न होने लगती हैं। मंजरी द्वारा विवाह की बात पर वह अपनी मानसिक दशा पर विचार करता है– "कौन ऐसी भौतिक, प्राकृतिक या अप्राकृतिक शक्ति है जो उसे अपनाने से मुझे बार–बार रोकती है और बार–बार मुझे नरक के गहन से गहनतर स्तर की ओर बरबस घसीटे लिए जाती है।"[2] मंजरी के साथ वह जब भी प्रेम में निमग्न रहता है तो वहीं अव्यक्त छाया उसके सामने खड़ी हो जाती है। वह मंजरी की गर्भवती स्थिति से कतराने लगता है। एक ओर नंदिनी है तो दूसरी ओर गर्भवती मंजरी। "मंजरी के संसर्ग से बल्कि मंजरी के गर्भस्थित बच्चे के सामीप्य से वह बेतरह कतराने लगा और हजार कोशिशों के बाद भी अपने मन की पलायन प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त करने में असमर्थ रहा।"[3]

अन्त में पारसनाथ के मन की ग्रन्थि के खुलने और मंजरी के डॉक्टर बनने की घटना है। पारसनाथ जब नंदिनी की बहन हीरा के गहनों की पोटली को लेकर भागने की सोचता है तो उसी समय उसके पिता का पुराना नौकर मिलता है; वही उसे वापस उसके पिता के पास ले जाता है। पिता द्वारा झूठ–मूठ में पुत्र न होने की बात जानकर उसके मन की ग्रन्थि खुल जाती है और वह हीरा के साथ विवाह कर लेता है। उधर मंजरी डॉक्टर का कोर्स करके

---

1 'प्रेत और छाया' : पृष्ठ – 297

2 'प्रेत और छाया' : पृष्ठ – 194

3 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 279

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

एक डॉक्टर से विवाह कर लेती है। पारसनाथ मंजरी से क्षमा माँग कर देश सेवा का व्रत लेता है।

इस प्रकार लेखक ने समस्त उपन्यास में चेतन और अवचेतन मन के द्वन्द्व को चित्रित किया है। सम्पूर्ण उपन्यास में लेखक ने विभिन्न यौन समस्याओं का चित्रण करने पर भी नग्नता का आभास कर नहीं आने दिया है।

निर्वासित : 'निर्वासित' उपन्यास में मध्यम वर्गीय समाज द्वारा प्रताड़ित महीप नामक एक ऐसे नवयुवक की कहानी है जो इस शोषण से त्रस्त होकर प्राणान्त कर लेता है। जोशी जी ने इसकी भूमिका में स्पष्ट किया है कि द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ के समय से उपन्यास का प्रारम्भ होता है और कहानी का समापन द्वितीय महायुद्ध के बाद उस समय होता है, जब अणुबम के अविष्कार से तृतीय महायुद्ध का छायाभास मिलने लगता है– "उपन्यास का नायक किन–किन व किस प्रकार के पात्रों और पात्रियों के सम्पर्क में आता है, जीवन के किन–किन घटनाचक्रों का सामना उसे करना पड़ता है और उनकी क्या–क्या और कैसी–कैसी प्रतिक्रियाएँ उसके भीतर होती है, इन्हीं सब बातों का चित्रण करने का प्रयत्न मैंने किया है।"[1]

एम.ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण महीप अपने किसी आदर्श के कारण आई. सी.एस. की परीक्षा में नहीं बैठता है। अपने सहपाठी के माध्यम से वह भुवनेश्वरी द्वारा संरक्षित खन्ना परिवार से मिलता है, जिसमें भुवनेश्वरी के अलावा उसकी चार लड़कियाँ रमा, सुषमा, प्रतिमा और नीलिमा रहती हैं। महीप एक–एक कर इन चारों बहनों की ओर आकर्षित होता है, लेकिन सभी के द्वारा ठुकराया जाता है। इस कारण से एवं अपने बबुआ रूप से उसके अन्दर कुण्ठा की प्रवृत्ति जगने लगती है। सभी बहनों के मन मन्दिर से निर्वासित होने के बावजूद वह प्रतिमा और नीलिमा के अवचेतन मन में गहरी छाप छोड़ता है। नीलिमा महीप को शिशु रूप में देखती है। एक ओर वह महीप को चाहती है, दूसरी ओर ठाकुर

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, भूमिका

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

लक्ष्मीनारायण सिंह को। ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह के ठाट–बांट व चकाचौध से प्रभावित होकर वह उससे विवाह करती है, लेकिन कुछ समय पश्चात् उसके अत्याचारों से तंग आकर उसे छोड़कर अपनी बहन सुषमा के यहाँ चली जाती है। नीलिमा द्वारा उपेक्षित महीप में हिंसा की प्रवृत्ति जगने लगती है और वह गुप्त दल का गठन करता है। अणुबम के अविष्कार और उससे होने वाले विनाश को जानकर वह गुप्त दल छोड़ देता है। अन्त में ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह को बचाने के चक्कर में जेल चला जाता है और जेल में ही उसकी मृत्यु हो जाती है। उपन्यास में धीराज और शारदा की उपकथा भी है। धीराज अपने असफल प्रेम के कारण आत्महत्या कर लेता है।

उपन्यास के प्रारम्भ में ही हम महीप को एक आदर्शवादी युवक के रूप में पाते हैं। वह आई.सी.एस. की परीक्षा पास कर सकता था, लेकिन अपने आदर्श के कारण ही वह इस परीक्षा में नहीं बैठता है– "उसके मन में यह विश्वास जम गया कि उस पद पर प्रतिष्ठित होने पर न चाहने पर भी बरबस अपने ही भाईयों पर रौब गाँठने की प्रवृत्ति से वह किसी प्रकार बच नहीं सकता।" [1] इन्हीं काल्पनिक आदर्शों के चक्कर में पड़कर वह जीवन भर इधर–उधर भटकता रहा।

खन्ना परिवार की चारों बहनों की ओर वह आकर्षित होता है। लेकिन प्रत्येक के द्वारा ठुकराया जाता है। इन सब का कारण वह अपने बबुआ रूप को समझता है। अपने बबुआ रूप के कारण उसके मन में आत्मकुण्ठा की भावना उत्पन्न होती है। "उसका नाट्य कद, दुबला–पतला शरीर और मूँछ विहीन मुख सब मिलकर वह एक अच्छा खासा बबुआ सा दिखाई देता है।"[2]

सर्वप्रथम महीप नीलिमा की बड़ी बहन रमा की ओर आकर्षित होता है। उसका विवाह हो जाने के बाद वह दूसरी बहन सुषमा की ओर आकर्षित होता

---

1 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 13

2 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 10

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

है। दोनों से निराश होकर दो वर्ष इधर–उधर भटकने के बाद वह जब इलाहाबाद आता है, तो प्रतिमा की ओर आकर्षित होता है। प्रतिमा के अवचेतन मन में भी महीप के लिए आकर्षण है। महीप को लिखे अपने अन्तिम पत्र में वह स्वीकार करती है– "अपने जीवन की किशोरावस्था में मैने तुम्हें अपने भावी जीवन का ध्रुवतारा समझा था। मेरे भीतर यह विश्वास अडिग रूप से वर्तमान था कि उस ध्रुवतारे का अनुसरण करते हुए मैं घोर से घोर संकट की स्थिति में भी एक सुनिश्चित पथ से भटक नहीं सकती।"[1] समाज में घटित होने वाली विभिन्न घटनाओं का प्रतिमा के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। द्वितीय महायुद्ध, बंगाल का मनुष्यभक्षी अकाल आदि अनेक घटनाओं के फलस्वरूप उसमें प्रतिहिंसा की भावना जगने लगती है और वह महीप के गुप्त दल में शामिल होकर अन्त में लक्ष्मीनारायण जैसे क्रूर व्यक्ति का विनाश करके ही दम लेती है।

नीलिमा के मन–मन्दिर में भी महीप अपना अधिकार जमाता है। स्वयं भी वह नीलिमा की ओर आकर्षित होता है– "नीलिमा की चंचलता, उसकी व्यंग्यवाणी उसका पहनावा उसकी प्रत्येक चाल महीप को अद्‌भुत अतीन्द्रिय और अपूर्व रूप से आकर्षक लग रहे थे।"[2] नीलिमा एक ओर तो महीप की ओर आकर्षित होती है, दूसरी ओर ठाकुर लक्ष्मीनारायण की ओर। उसके मन में अन्तर्द्वन्द्व उठता है और वह ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह की सम्पन्नता के कारण उनकी ओर आकर्षित होती है। वह सोचती है– "ठाकुर साहब की आर्थिक सम्पन्नता का आकर्षण कितना बड़ा है यह कठोर वास्तविकता स्पष्ट से स्पष्टतर रूप में उनके सामने आती है।"[3]

ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह के अत्याचारों से तंग आकर जब वह सुषमा के यहाँ पहुँचती है, उसके बाद भी महीप नीलिमा को अपनाने के लिए तैयार है। वह नीलिमा से कहता है– "नीलिमा मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि सब–कुछ

---

1 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 345

2 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 14

3 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 74

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

घटने के बावजूद तुम मेरे लिए अभी तक प्रभात के तरल–तुहिन की तरह निर्मल और शुद्ध हो, हिमालय के ऊपरी स्तर पर पुंजित शुभ्र हिमानी की तरह निष्कलंक हो।"[1]

इस प्रकार लेखक ने सम्पूर्ण उपन्यास में जहाँ महीप, ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह और नीलिमा के त्रिकोणात्मक प्रेम तथा धीराज और शारदा के असफल प्रेम का चित्रण किया है वहीं अणुबम के अविष्कार का विनाशकारी प्रभाव का वर्णन भी किया है।

मुक्तिपथ : 'मुक्तिपथ' जोशी जी का 1950 में प्रकाशित एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें भारत विभाजन के पश्चात् की राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक दशा का सफल चित्रण हुआ है। यह एक ऐसे नवयुवक की मर्मस्पर्शी कथा है, तो जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के फलस्वरूप क्रान्तिकारी बन जाता है और अनेक प्रकार के चक्रों से होता हुआ कालेपानी की सजा भुगत कर लौटने के बाद नौकरी की तलाश में इधर–उधर भटकता है।

उपन्यास का नायक राजीव साल भर जेल की हवा खाने के बाद एक सरकारी अफसर के यहाँ ठहरकर नौकरी की तलाश करता है। उमाप्रसाद के यहाँ रहने वाली विधवा सुनन्दा की ओर राजीव आकर्षित होता है। सुनन्दा ही उमाप्रसाद के यहाँ समस्त गृहस्थी संभालती है। वह भी राजीव की ओर आकर्षित होती है। उमाप्रसाद की लड़की प्रमीला के विवाह की तैयारियों में सुनन्दा की उपेक्षा की जाती है, जिससे वह दुःखी होती है। प्रमीला सुनन्दा और राजीव का मिलन करवाती है। राजीव और सुनन्दा लखनऊ छोड़कर रिफ्यूजी कैम्प में रहकर दूसरों की सेवा में अपने जीवन को समर्पित कर देते हैं। राजीव कर्म को प्रधानता देता है। वह सुनन्दा के प्रेम की अवहेलना करता है। दो वर्ष साथ रहने के पश्चात् सुनन्दा इसी प्रेम के कारण राजीव से विद्रोह कर देती है। उधर

---

1 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 370

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

प्रमीला विजय से विवाह करती है। विजय कंजूस प्रवृत्ति का व्यक्ति है। धनसंचय ही उसका लक्ष्य है। अन्त में घूस लेने के मामले में सी.बी.आई. छापे की बात सुनकर वह आत्महत्या कर लेता है।

उपन्यास में राजीव व सुनन्दा के आपसी आकर्षण व द्वन्द्व का चित्रण हुआ है। यथार्थोन्मुख राजीव सुनन्दा के प्रेम की अवहेलना कर केवल कर्म–रत जीवन व्यतीत करता चाहता है, जबकि सुनन्दा जीवन सफल होने के लिए सहज स्नेह को अनिवार्य मानती है। जन्म से पहले ही पिता की मृत्यु होने व उसके बाद माँ और बहनों की मृत्यु हो जाने के बाद राजीव के मन में सहज प्यार की अपेक्षा कठोर भावना उत्पन्न होती है और वह क्रान्तिकारी बन जाता है। फलस्वरूप काले पानी की सजा भुगत कर जब वह समाज में अपने लिए कोई नौकरी खोजता है, तो उसे अनेक कटु–अनुभव होते हैं। इन कटू–अनुभूतियों से होता हुआ वह मिथ्याचार में डूबे समाज के नवनिर्माण की कल्पना करने लगता है– "धीरे–धीरे उसके भीतर एक भयंकर प्रकार की स्थिरता अधिकार जमाने लगी। वह अपने अन्तस्तल में प्रलय की आग की–सी दहन शक्ति का अनुभव करने लगा। वह सोचने लगा, इस प्रचण्ड अग्नि को किसी तरह बाहर निकालकर सारे संसार को फूँककर यदि वह एक बार नये सिरे से उसकी रचना करने में समर्थ होता तो कम से कम वर्तमान युग के विश्वव्यापी मिथ्याचार की जड़े तो नष्ट कर ही डालता।"[1]

उमाप्रसाद के यहाँ रहते हुए राजीव सुनन्दा की ओर आकर्षित होता है। सुनन्दा का सौन्दर्य उसे नित्य नया लगता है और उसके मन में उसमें गोता लगाने की इच्छा होती है– "उसकी स्निग्ध सरस आँखों में प्रशान्त सागर का सा एक ऐसा मधुर गाम्भीर्य घनीभूत रहता था कि राजीव को उसके तल प्रदेश में डूबकर गोता लगाने की इच्छा होती थी।"[2]

---

1 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 10

2 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 17–18

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

राजीव व सुनन्दा के मध्य के आकर्षण को हम एक नए रूप में पाते हैं। वह सुनन्दा को सीमित परिवार के बीच से निकालकर समाज में प्राणदायिनी शक्ति फूँकने का आह्वान करता है। वह सुनन्दा से कहता है– "सारा देश और सम्पूर्ण संसार तुम्हारे ही समान किसी ऐसी तेजस्विनी नारी का आह्वान कर रहा है, जिसकी आत्मा के अक्षय भण्डार में जीवन–शक्ति प्रदायिनी अशेष अग्नि निहित हो और जो उस महाकाल की सी अग्नि की प्रचण्ड ज्वाला को स्वयं पीती हुई उसकी मीठी आँच के सत्वहीन, शोषित और निर्जीव मानव जगत में बिखेर कर एक नया संजीवन, एक अभिनव चेतना, एक अपूर्व प्राण–स्पन्दन जगा सके।"[1] राजीव सामूहिक हित के लिए व्यक्तिगत सुख–दुःख को तिलांजलि देने की बात कहता है, लेकिन सुनन्दा कर्म के साथ–साथ स्नेह और त्याग को भी महत्व देने को कहती है। इसी कारण वह राजीव का साथ छोड़ देती है।

सुनन्दा के अवचेतन मन में दमित काम वासनाएँ विद्यमान है। वह इसीलिए राजीव का साथ देती है। वह प्रमीला से कहती है– "कई पीढ़ियों से बंजर पड़ी हुई जमीन तुम्हारे राजीव बाबू के दुर्दम कर्मोद्यम से आज लहलहा रही है, पर मेरे भीतर की जमीन एकदम सूखी और सूनी पड़ी है। बालू केवल बालू! पानी की बूँद भी कहीं नहीं है– हरियाली की कौन कहे!"[2]

उपन्यास में प्रमीला और विजय का आकर्षण भी एक नए रूप में देखने का मिलता है। प्रमीला विजय से इसलिए विवाह करती है ताँकि वह उसे चिढ़ा सके। विजय लोभी एवं कंजूस प्रवृत्ति का व्यक्ति है। पहली पत्नी से वह दहेज के लालच में ही शादी करता है लेकिन उसकी मृत्यु के बाद भी उसकी आँखे नहीं खुलती हैं। वह प्रमीला से विवाह करता है। लोभी प्रवृत्ति के कारण वह घूस लेता है और प्रमीला द्वारा झूठ–मूठ में सी.बी.आई. जाँच की बात सुनकर व

---

1 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 86

2 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 277

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

आत्महत्या कर लेता है।

इस प्रकार लेखक ने सम्पूर्ण उपन्यास में राजीव के माध्यम से बेरोजगार युवकों की दुर्दशा और सुनन्दा के माध्यम से भारतीय विधवा की करूण स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसके अतिरिक्त उपन्यास में भारत की सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक दशा का चित्रण मिलता है।

सुबह के भूले : 'सुबह के भूले' एक ऐसी नारी की कहानी है, जो जीवन के बाहरी चकाचौध से प्रभावित होकर अपने मूल पथ को छोड़कर उसी ओर चल पड़ती है। वहाँ उसे अनेक कटु–अनुभूतियाँ प्राप्त होती हैं और अन्त में वह अपनी मूल अवस्था में लौट आती है।

उपन्यास में दिखाया गया है कि गुलबिया अपनी माता झमिया और चाचा महावीर के साथ बम्बई में रहती है। महावीर बम्बई में दूध का व्यवसाय करता है। गुलबिया का पिता वैजनाथ भी पहले दूध का व्यवसाय करता था, लेकिन अचानक मृत्यु हो जाने से झमिया और गुलबिया महावीर के पास रहने लगते हैं। गुलबिया जब कालेज पहुँचती है, तो उसे अपना गुलबिया नाम अच्छा नहीं लगता है। वह अपना नाम बदलकर गिरिजा रखती है। कालेज में ही उसकी दोस्ती शांता से होती है। शांता के माध्यम से ही वह मोहनकुमार, हेमकुमार आदि अनेक व्यक्तियों से मिलती है। गिरिजा उन लोगों के ठाट–बाट व चका–चौध से प्रभावित होती है। वह उनसे अपनी सच्चाई छुपाए रखती है। उसे अपने घर से विरक्ति होने लगती है; इसलिए बी.ए. करने के बाद वह हास्टल में रहने लगती है। मोहनकुमार प्रारम्भ में तो उससे गर्मजोशी से मिलता है, लेकिन फिर सभी लोग दूध बेचने वाले की लड़की होने के कारण उससे कन्नी काटने लगते हैं। केवल हेमकुमार ही उसका साथ देता है और उसी के प्रयासों से वह एक सफलतम् अभिनेत्री, निर्देशिका और निर्माता बनती है। अन्त में उसके ज्ञानचक्षु खुलते हैं। वह अपने बचपन के प्रेमी किशन से विवाह करती है और समाज के निम्न से निम्न व्यक्ति को शिक्षा सुलभ कराने के लिए एक

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

शिक्षण संस्था की स्थापना करती है।

सर्वप्रथम गुलबिया में अपने नाम के प्रति हीन भावना उत्पन्न होती है। गुलबिया नाम अच्छा न लगने के पीछे वह तर्क देती है– "गुलाब का फूल अच्छा लगता है, पर गुलबिया नाम अच्छा नहीं लगता? उससे देहातीपन की 'बू' आती है।"[1] इसी हीन भावना के कारण वह अपना नाम बदलकर गिरिजा रखती है। उसमें आत्म–लघुता की भावना भी विद्यमान है; इसलिए वह मोहनदास को अपना घर दिखाने में हिचकिचाती है। "उसकी आलीशान और सुसज्जित फ्लेंट देखने के बाद वह अपने शेड के भीतर एक टूटी कुर्सी या तख्त पर बैठने को कैसे कहेगी?"[2]

गुलबिया से गिरिजा बनने के बाद वह भ्रान्त पथिक की तरह अपने पथ से विमुख होने लगती है। मोहनदास के यहाँ चाय पार्टी से लौटने के बाद उसके मन में सभी के प्रति विरक्ति का भाव उत्पन्न होता है। "घर लौटने पर उसके मन में फिर एक विचित्र ढंग की बेचैनी और उदासी समा गयी। वह अपनी वेदना को स्वयं ठीक से नहीं समझ पा रही थी, दूसरों को क्या समझाती, अपने घर का सारा वातावरण उसे एकदम विजातीय सा, अरूचिकर और घिनौना लगने लगा था। अपनी अम्माँ और चाचा के प्रति भी एक उत्कट विरक्ति का भाव वह अपने भीतर महसूस करने लगी।"[3]

लेखक ने उच्च समाज के संकीर्ण मानसिकता को उजागर करने का प्रयास किया है। वह समाज व्यक्ति के व्यक्तित्व से अधिक उसके सामाजिक स्तर को देखता है। अपने इसी सोच के कारण धीरे–धीरे उसके साथी लोग उससे कटने लगते हैं। हेमकुमार गिरिजा के बताता है– "किसी दूध बेचने वाले की लड़की से फिर चाहे वह कैसी ही पढ़ी–लिखी क्यों न हो, समान स्तर पर

---

1 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 66

2 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 91

3 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 101

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

बातें करने और हिलने मिलने से अधिक अपमानकर बात वे अपने लिए दूसरी नहीं समझते।"[1] हेमकुमार गिरिजा का साथ नहीं छोड़ता है। उसी के कहने पर गिरिजा फिल्मी समाज में प्रवेश करती है और अपने परिश्रम और लगन से एक अभिनेत्री, निर्देशिका और फिल्म निर्माता बनती है। वह एक नई कहानी लिखती है, जो उसके जीवन पर ही आधारित होती है। उसे वह 'सुबह के भूले' नाम देती है।

अन्त में लेखक ने गिरिजा को परिवर्तित रूप में दिखाया है। वह गिरिजा से गुलबिया बन जाती है। हेमकुमार के निश्चल प्रेम को वह ठुकरा देती है और उससे कहती है– "मैं अपने जीवन संगी को बहुत पहले चुन चुकी हूँ, आपसे परिचय होने से भी बहुत पहले बल्कि जीवन की वास्तविकता से परिचय होने से भी पूर्व। यह ठीक है कि बीच में मेरे जीवन की परिस्थितियाँ बदल जाने से मैं कुछ वर्षों के लिए भटक गयी थी और तब अपने उसी जीवन संगी के सम्बन्ध में गंभीरतापूर्वक विचार करने का अवकाश ही मुझे नहीं मिलता था। पर अब मेरी आँखे खुल गयी हैं और मेरे विचार निश्चित हो चुके हैं; इसलिए उस विशेष अर्थ में मेरे जीवनसंगी बनने की बात आप सदा के लिए अपने मन से निकाल लें।"[2] उसका वह जीवन संगी और कोई नहीं बचपन का साथी किशन है, जिससे वह अन्त में विवाह कर लेती है।

उपन्यास में झमिया की कथा अत्यधिक मर्मस्पर्शी है। अपने जीवन में उसने कभी सुख नहीं देखा। पहले विधवा होने के बाद मौसी के अत्याचारों को सहा। उसके बाद जब वैजनाथ से विवाह होने के बाद सुख के दिन आते हैं तो उस पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ता है, वह विधवा हो जाती है। लेकिन झमिया बड़े धैर्य से सब कुछ सहती है और इन्हीं गुणों के कारण अन्त में देवी के पद पर सुशोभित होती है।

---

1 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 120

2 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 182

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

त्याग का भोग : 'त्याग का भोग' जोशी जी का 1952 में प्रकाशित 'जिप्सी' का परिवर्तित संस्करण है। इस उपन्यास में लेखक ने पूँजीवादी वर्ग के रोमांस की कथा को स्वयं नायक के शब्दों में चित्रित करने का प्रयास किया है।

उपन्यास का नायक नृपेन्द्र रंजन मंसूरी भ्रमण के दौरान एक ईरानी जिप्सी लड़की मनिया की ओर आकर्षित होता है, जो वहाँ छोटी–मोटी चीजें बेचकर गुजारा करती है। नृपेन्द्र रंजन सर्वप्रथम मनिया का सारा सामान खरीदता है, उसके बाद मनिया के रूपये चोरी हो जाने पर उससे सहानुभूति प्रकट कर हिप्नोटिक कला द्वारा उसे अपने अनुसार ढालता है। होटल मालिक द्वारा आपत्ति किये जाने पर वह मनिया को लेकर शहर से दूर मिसेज रालिन्सन के बंगले में किराये पर रहने लगता है। मनिया को अंग्रेजी पढ़ाने के लिए वह मिसेज रालिन्सन की लड़की सिल्विया को नियुक्त करता है। सिल्विया के सम्पर्क में आने पर मनिया ईसाई धर्म से अत्यधिक प्रभावित होती है। वह नृपेन्द्र रंजन से ईसाई धर्म के अनुसार ही विवाह करने के लिए कहती है। विवाह होने के कुछ समय पश्चात् दोनों कलकत्ता जाते हैं। कलकत्ता में वे अपने पुराने मित्र वीरेन्द्र और उसकी पत्नी शोभा के यहाँ ठहरते हैं। वहाँ एक दुर्घटना में तेजाब गिरने से मनिया की मुखाकृति बिगड़ जाती है। इधर नृपेन्द्र वीरेन्द्र की पत्नी शोभा की ओर आकर्षित होता है। उधर मनिया एक बच्चे को जन्म देती है, लेकिन आठ माँह के बाद उसकी मृत्यु हो जाती है। एक आन्दोलन में गोली लगने से वीरेन्द्र की मृत्यु हो जाती है। मनिया कन्हाईलाल के दल में शामिल होती है और विदेश जाकर प्लास्टिक सर्जरी कराकर मंजुला के रूप में नर्स बनकर वापस आती हैं। नृपेन्द्र रंजन मंजुला की ओर भी आकर्षित होता है। बाद में प्लास्टिक सर्जरी का भेद खुलने पर नृपेन्द्र को आश्चर्य के साथ–साथ दुःख भी होता है।

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

उपन्यास का नायक नृपेन्द्र रंजन पूँजीवादी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। मनिया से प्रथम मिलन में ही उसकी ओर आकर्षित होता है– "उसके असाधारण रूप रंग ने मुझे इस कदर आकर्षित किया कि मैं उसकी दुकान के पास जाकर ठहर गया।"[1] वह उसको पाने के बाद भी उस पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिए सम्मोहन कला का प्रयोग करता है।

उपन्यास में बुर्जुआ संस्कारों का प्रदर्शन अनेक स्थानों पर हुआ है। अपने बुर्जुआ संस्कारों के कारण ही नृपेन्द्र रंजन कलकत्ता में वीरेन्द्र के यहाँ रहते हुए उसकी पत्नी शोभा की ओर आकर्षित होता है। मनिया का सारा सामान खरीदते समय, मिसेज रालिन्सन के यहाँ और शोभना की कोठी में भी हम उसके बुर्जुआ प्रवृत्ति के दर्शन करते हैं। यहाँ तक कि मनिया पर भी नृपेन्द्र के बुर्जुआ संस्कृति का प्रभाव पड़ता है और वह देहरादून जाकर सारा नया फर्नीचर खरीद लाती है।

कलकत्ता में हमें दो भिन्न प्रकार के चरित्र देखने को मिलते हैं। एक ओर बुर्जुआ संस्कारों वाला नृपेन्द्र है, वहीं दूसरी ओर प्रोलेतेरियन प्रवृत्ति का वीरेन्द्र। वीरेन्द्र सम्पूर्ण कथा में प्रोलेतेरियन वर्ग का साथ देता है। वह कन्हाई के गुप्त दल में शामिल होकर एक जलूस का नेतृत्व करते हुए गोली लगने से मृत्यु को प्राप्त होता है। मृत्यु से पूर्व वीरेन्द्र अपनी सारी सम्पति गुप्त दल को भेंट कर देता हैं। वीरेन्द्र की मृत्यु के बाद इस दल को मनिया का सहयोग मिलता है और अपने बच्चे की मृत्यु के बाद वह पूर्ण रूप से दल को सहयोग कर प्रोलेतेरियन विचारधारा का प्रचार करने लगती है।

कथा में शोभना के अन्दर भी बुर्जुआ संस्कारों की झलक मिलती है। शोभना बुर्जुआ संस्कारों में पली बढ़ी है और वीरेन्द्र पर प्रोलेतेरियन प्रवृत्ति का प्रभाव है। शोभना अपने वैवाहिक जीवन से सुखी नहीं है। इसलिए वह रंजन की ओर आकर्षित होती है। अन्तिम समय में उसका नैतिक पतन होता है। वह

---

1 'त्याग का भोग' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 14

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

शराब पीने लगती है और हर समय भोग विलास में रत रहना चाहती है इससे नृपेन्द्र रंजन के मन में उसके प्रति उत्कट अरूचि की भावना उत्पन्न हो जाती है। सम्पूर्ण उपन्यास में लेखक ने सम्मोहन व मनोविश्लेषण को प्रश्रय दिया है। लम्बे–लम्बे भाषणों से कथा की प्रवाहत्मकता में कमी आयी है।

जहाज का पंछी : 'जहाज का पंछी' जोशी जी की यथार्थपरक रचना है। यह परिस्थिति और समाज से तिरस्कृत एक ऐसे नवयुक की कहानी है, जो कलकत्ता की विशाल महानगरी में इधर–उधर भटकने को विवश होता है, जिसके भीतर दूसरों के प्रति गहरी सहानुभूति है। सामूहिक पीड़ा के आगे वह अपनी पीड़ा एवं कठिनाइयों को कुछ महत्व नहीं देता है। आवश्यकता पड़ने पर वह सभी की सहायता करते के लिए हमेशा तैयार रहता है। उसकी ईमानदारी ही पग–पग पर उसके लिए मुसीबत बनती है। उपन्यास का नायक अपनी आपबीती को स्वयं ही पाठकों के सम्मुख रखता है।

उपन्यास के प्रारम्भ में ही लेखक ने नायक को कलकत्ता महानगरी में भटकते हुए दिखाया है। पार्क में बैठे हुए जब वह ईमानदारी दिखाता है, तो उसे गिरहकट समझ लिया जाता है। पुलिस वाले के धक्के से बेहोश होकर जब उसे होश आता है तो वह अपने आप को अस्पताल में पाता है। अस्पताल में उसकी भेंट प्यारे धोबी से होती है। इतने दिनों तक निराश्रय और भूखा रहने के कारण उसे अस्पताल का आश्रय बहुत ही अच्छा लगता है। बाहरी चक्करों से परेशान होकर वह अस्पताल में ही पड़ा रहना चाहता है, लेकिन वहाँ से जबरदस्ती निकाल दिया जाता है। बाहर आकर वह धोबी के घर में चीटियों, मच्छरों, खटमलों आदि के मध्य गंदगी में रहकर नौकरी करता है। उसके बाद कुछ दिन पहलवानों के मध्य रहता है, कुछ दिनों तक एक सम्पन्न बंगाली परिवार में नौकरी करता है। उपन्यास का नायक जहाँ कहीं भी जाता है, कोई न कोई अवरोध उसे वहाँ की नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य करता है। बंगाली परिवार से नौकरी छोड़ने के बाद वह मिस साइमन के चकले में कुक का काम करता है।

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

मिस साइमन के चकले में शरीर बेचने के लिए बाध्य की जाने वाली स्त्रियों की दुर्गति देखकर वह उसके अत्याचारों के विरूद्ध सभी नौकरों व लड़कियों को संगठित करता है और मिस साइमन की मृत्यु के बाद वह सभी को स्वतंत्र करता है। इसके पश्चात वह लीला के यहाँ नौकरी करता है। लीला उसकी प्रतिभा को पहचानकर उसे गृहस्वामी का दर्जा देती है। पिछले जीवन की कटु अनुभूतियों के कारण वह लीला से आधी सम्पति असहायों के उद्धार के लिए दान करने को कहता है, लेकिन लीला के उत्तर का भिन्न अर्थ लगाकर वह उसे छोड़कर राँची चला जाता है। अन्त में लीला उसे खोजते हुए राँची पहुँचकर अपनी सारी सम्पति उसके पैरों पर समर्पित कर उसे वापस ले आती है।

उपन्यास के प्रारम्भ में लेखक ने नायक की दशा का वर्णन किया है। अस्त व्यस्त बालों, एक हफ्ते से न बनी दाड़ी, क्षय रोग की तरह चेहरा और मैले कपड़ों को देखकर सभी लोग उसे गिरहकट समझकर सावधान रहते हैं। कलकत्ता जैसे महानगर में नायक को अपने खाने से अधिक चिंता अपने रहने की होती है। वह कहता है– "क्या खाऊँ यह प्रश्न मेरे मन में बाद में उठा; कहाँ जाऊँ यह प्रश्न प्रधान बनकर पहले ही मेरी छाती पर चढ़कर बैठ गया। लगता था कि यदि कहीं लेटने भर को जगह पा जाऊँ तो कई युगों तक बिना अन्न–जल लिये भी जी सकूँगा।"[1]

कथा का नायक विषम से विषम परिस्थिति में भी धैर्य और संयम से काम लेता है। प्रथम बार जब वह अपने को अस्पताल में पाता है, तो बाहरी समाज से प्रताड़ित होने के कारण उसे अस्पताल का आश्रय अच्छा लगता है। वह कहता है– "यह अनुभूति मुझे बहुत ही सुखद लगी कि मैं एक पलंग पर लेटा हूँ, फुटपाथ पर या बेंच पर नहीं। मुझे एक गिलास दूध पिलाया गया और दोपहर को हल्का खाना भी दिया गया। मैंने दूध भी बड़े ही स्वाद से पिया और खाना भी बड़ी तृप्ति से खाया। मुझे लगा कि पुलिस वाले का धक्का देना मेरे

1 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 9

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

लिए बड़ा ही वरदान सिद्ध हुआ।"[1] मजिस्ट्रेट के सामने भी वह धैर्य और संयम से अपना पक्ष रखता है। अच्छी नौकरी न मिलने पर वह विभिन्न प्रकार के काम भी करता है।

उसकी वेशभूषा के कारण ईमानदार होते हुए भी सभी लोग उस पर सन्देह करते हैं। लोगों की इस प्रतिक्रिया का प्रभाव उसके अवचेतन मन पर पड़ता है, लेकिन वह फिर भी ईमानदारी का साथ नहीं छोड़ता है, धैर्य और संयम से सब कुछ सहन करता है। लीला द्वारा रसोई का काम खोजने का कारण पूछने पर उससे कहता है– ".....मैं कोई विशेष गुणी न होने पर भी पढ़ना–लिखना जानता हूँ और पढ़ने–लिखने से सम्बन्धित कोई भी काम कर सकता हूँ, पर पहले तो इस तरह के कामों का आज बहुत बड़ा अभाव है, वहाँ आज के भ्रष्टाचारी युग के अयोग्य व्यक्ति उस ठेलम–ठेल में पीछे को ढकेल दिए जाते हैं और दुनियावालों की नजरों में चोर, गुण्डे, बेईमान और बदमाश सिद्ध होकर दर–दर ठोकरें खाते फिरते हैं, गली दर गली भटकते रह जाते हैं और एक जेल से दूसरे जेल में आश्रय खोजते रहने के सिवा उनके लिए कोई दूसरा चारा नहीं रह जाता है। उन्हीं युग–प्रताड़ित आवारों में मैं भी एक हूँ–बस केवल इतनी ही मेरी रहस्यमयता है।"[2]

लेखक ने स्थान–स्थान पर पुलिस के निरंकुश तानाशाही को चित्रित किया है। पहले ही जहाज पर पकड़े जाने पर नायक को वह एक ठग सिद्ध करने का प्रयास करते हैं, लेकिन उनके द्वारा पेश झूठे गवाहों को जज पकड़ लेता है। मिस साइमन के चकले में जब मिस साइमन अमला और सुजाता को निकालने के लिए पुलिस बुलाती है तो नायक के प्रबल प्रतिरोध एवं भाषण से वह वापस लौट पड़ती है। मिस साइमन की हत्या के बाद जब उस वेश्यालय को देवालय बना लिया जाता है, तो एक बार फिर पुलिस वाले नायक को

---

1 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 15

2 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 273–274

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

परेशान करने के लिए उसे पकड़कर ले जाते हैं। लेखक के 'जहाज का पंछी' उपन्यास में अन्य उपन्यासों की अपेक्षा नवीनता का आभास मिलता है। इसमें उन्होंने सेक्स को महत्व न देकर जीवन की अन्य दूसरी आवश्यकताओं को महत्व दिया है।

ऋतुचक्र : 'ऋतुचक्र' उपन्यास में जोशी जी ने दादा अर्थात मिलनकुमार चटर्जी और प्रतिमा की मूलकथा के साथ–साथ चित्रा और नकुलेष एवं मणिक और लिली के परस्पर आकर्षण और प्रेम को चित्रित किया है।

कथा का केन्द्र पहाड़ी परिवेश का एक कस्बा है। उसी कस्बे के एक होटल में दादा ठहरे हुए हैं। वहीं उनकी मुलाकात प्रतिमा से होती है, जो उनकी शिष्या रह चुकी है। वर्तमान में वह एक कालेज में पढ़ाती है और छुट्टियाँ बिताने के लिए वहाँ आयी है। दादा और प्रतिमा दोनों एक–दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं और विवाह करने का निर्णय करते हैं। दादा और प्रतिमा की कथा के साथ–साथ चित्रा और नकुलेष की उपकथा भी है। नकुलेष उसकी ओर आकर्षित होता है। स्वतंत्र विचारों की चित्रा अपनी माता–पिता की इच्छा के अनुसार विवाह करती है, तो पहली ही रात में उसे गहरा धक्का लगता है। उसका पति शारीरिक, मानसिक व व्यावहारिक दृष्टि से नपुंसक होता है। इससे समस्त पुरूष समाज के प्रति उसके मन में घृणा की भावना उत्पन्न होती है। एक साल पति के घर रहकर वह उसे छोड़कर उस पहाड़ी कस्बे में आती है। वह सभी से मुक्त रूप से मिलती है, लेकिन संकीर्ण विचारों के नकुलेष को यह अच्छा नहीं लगता है, वह उस पर सन्देह करता है। संकीर्ण विचारधारा के कारण ही उनमें मन–मुटाव होते रहता है। अन्त में वह दिल्ली चला जाता है। चित्रा भी पुरूष समाज के प्रति घृणा के कारण आत्महत्या कर लेती है। मणिकलाल और लिली की उपकथा में भी दोनों एक–दूसरे से प्रेम करते हैं, लेकिन मणिकलाल द्वारा गिडवानी की हत्या के बाद वह उससे घृणा करने लगती है । वह गर्भ में पल रहे मणिकलाल के बच्चे को भी जिन्दा रखना नहीं

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

चाहती है, लेकिन दादा और प्रतिमा के समझाने पर वह उसको जन्म देने के लिए तैयार होकर लखनऊ को चली जाती है।

लेखक ने जहाँ एक ओर दादा और प्रतिमा के सफल रोमांस को चित्रित किया है, वहीं दूसरी ओर नकुलेष और चित्रा एवं मणिकलाल और लिली की त्रासद्पूर्ण कथा को चित्रित किया है। दादा और प्रतिमा दोनों में ही काम की प्रबल भावना है। दादा प्रतिमा को एक लड़की के रूप में ही देखते हैं। वह प्रतिमा से कहते हैं– "तुम्हें देखकर आज भी तुम्हारा वही शरारती लड़कियों वाला रूप मेरे आगे खड़ा हो जाता है, जो युनिवर्सिटी में मैं देखता था। सब कुछ जानने सुनने समझने पर भी मैं अभी तक तुम्हें प्रत्यक्ष लड़की के रूप में ही देख रहा हूँ।"[1] प्रतिमा के स्पर्श से उनकी काम–वासना प्रबल हो जाती है। उनके शरीर में सिरहन सी दौड़ उठती है– "बहुत दिनों बाद न जाने कितने युगों बाद वह अन्–अनुभूत किंतु चिर–इच्छित कोमलतम स्पर्श उनके अन्तर के कण–कण को गुदगुदाता हुआ, उसमें चिड़िया की साँस की तरह, तितली के पंखों के भीतर से निकलने वाली धड़कन की तरह, एक अपूर्व पुलक–सिरहन भरने लगा।"[2]

सैक्स के उदात्त रूप के प्रति अब तक दादा की आस्था अडिग व अटूट थी, लेकिन प्रतिमा के साथ प्रथम शारीरिक मिलन के बाद वे सैक्स को जीवन की ठोस वास्तविकता मानने लगते हैं– "स्त्री पुरूष का शारीरिक मिलन प्रतिदिन के जीवन की ठोस वास्तविकता है, उसकी न तो अवज्ञा ही की जा सकती है न निराकरण।"[3] प्रतिमा दादा को अपना पथ–प्रदर्शक मानती है। प्रकृति की सुन्दरता को देखकर उसका रोआं–रोआं विकल हो उठता है। उसको प्रत्येक साधारण दृश्य असाधारण लगने लगता है। वह दादा से कहती है– "दादा लगता

---

1 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 100

2 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 228

3 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 286

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

है जीवन में सबकुछ सुन्दर, मंगलमय और अछूता है, न कहीं तनिक भी उदासी है न उदासीनता न कहीं शंका है न संत्रास।"[1]

चित्रा की उपकथा अत्यधिक मर्मस्पर्शी और त्रासदपूर्ण है। नकुलेष चित्रा की ओर उसके शोधकार्य के दौरान आकर्षित होता है, लेकिन अपने संकीर्ण व परम्परावादी सोच के कारण वह चित्रा का किसी से बात करने पर उस पर सन्देह करने लगता है। अपने माता–पिता की इच्छा के अनुरूप जब वह विवाह करती है, तो प्रथम रात्रि में ही उसे पता चलता है कि उसका पति नपुंसक है। इससे उसके मन में सारे पुरूष समाज के प्रति घृणा की भावना उत्पन्न होती है– "सारा पुरूष समाज नपुंसक हो उठा है बाहर से भी और भीतर से भी, मन से, बुद्धि से, वाणी से और कर्म से भी।"[2] इसी कारण वह अन्त में आत्महत्या करती है।

मणिकलाल लिली से प्रेम करता है, लेकिन उसके मन में समस्त मनुष्य जाति के प्रति घृणा की भावना है। इसलिए वह गिडवानी की हत्या कर भाग जाता है, लेकिन चित्रा की आत्महत्या की खबर सुनकर उसका अवचेतन मन उसे कचोटने लगता है और वह आत्मसमर्पण कर देता है। वह दादा से कहता है– "मैं सच कहता हूँ दादा, मुझे जीवन में कभी एक क्षण के लिए भी ऐसा नहीं लगा कि मनुष्य मात्र के प्रति मेरी चेतना में सहज घृणा का जो भाव बड़ी गहराई से जमा हुआ है और उसमें भी विरोध रूप में नारी के प्रति वह कभी किसी भी कारण से बदल सकता है।"[3] लिली यद्यपि मणिकलाल से प्रेम करती है, लेकिन गिडवानी की हत्या के बाद वह उससे घृणा करने लगती है। वह अपने गर्भ में पल रहे मणिकलाल के बच्चे को भी गिरा देना चाहती है। दादा द्वारा गर्भ को स्वीकार करने की बात पर वह हिस्टीरियाग्रस्त की तरह चीखते हुए कहती है– "एक धोखेबाज और हत्यारे की सन्तान को मैं अपने गर्भ में कभी जिंदा नहीं

---

1 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 264

2 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 386–387

3 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 363

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

रहने दूँगी, मैं स्वयं अपने पेट में चाकू मारकर उसे चीर डालूँगी और स्वयं अपने ही हाथों से पूरे का पूरा उपाड़कर उसका एक–एक अंग काटकर एक–एक अंग के टुकड़ों के बचे हुए छोटे–छोटे अंशो को उसी चाकू से खुरज–खुरजकर मैं अपना सारा मैल धो डालूँगी। तभी मुझे शान्ति मिलेगी।"[1]

भूत का भविष्य : 'भूत का भविष्य' में जोशी जी ने राकेश और नन्दा के परस्पर प्रेम की कथा के साथ–साथ श्यामनाथ अर्थात भूतनाथ के माध्यम से समाज द्वारा हरिजनों की उपेक्षा व प्रताड़ना को चित्रित किया है।

ब्रजवासिनी नन्दा का राकेश से प्रथम परिचय उसके कालेज के एक कवि सम्मेलन में होता हैं। प्रथम मिलन के बाद ही दोनों एक–दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं और भागकर इलाहाबाद पहुँच जाते हैं, लेकन वहाँ उन लोगों को कहीं भी किराए का मकान नहीं मिलता हैं। बड़ी मुश्किल से सिविल लाइन्स में उन्हें एक भुतहा मकान मिलता है। भूतनाथ की कथा यहीं से आरम्भ होती है। हरिजन होने के कारण समाज द्वारा उसे प्रताड़ित किया जाता है। वह जहाँ भी जाता है। समाज द्वारा दुरदुराया जाता है। इसी कारण समाज के उच्च वर्ग के प्रति उसके मन में विद्रोह की भावना जाग्रत होने लगती है। जब उसे कहीं ठिकाना नहीं मिलता है तो वह उस भुतहा मकान में रहने लगता है और वहाँ आने वाले किरायेदारों को वहाँ से जाने पर मजबूर कर देता है। जब राकेश और नन्दा वहाँ रहने के लिए आते हैं तो वह उन्हें भी भगाने की कोशिश करता है। राकेश उसका सहपाठी रह चुका है। जब वह दोनों की दशा देखता है तो वह उनकी मद्द करता है। वह राकेश और नन्दा को अपनी कहानी बताता है और डाकुओं द्वारा छिपाए गये धन का रहस्य भी बताता है। राकेश उससे ईर्ष्या कर उसको पकड़वाने के लिए पुलिस को बुलाता है लेकिन भूतनाथ फरार हो जाता है। कुछ दिन बाद पुलिस पुनः आकर राकेश पर भूतनाथ का पार्टनर होने के

---

1 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 455

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सन्देह पर उसे गिरफ्तार कर लेती है। नन्दा सब–कुछ छोड़कर यमुना में कूदने के उद्देश्य से मथुरा की बस में सवार हो जाती है।

उपन्यास में लेखक ने समाज के उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग के प्रति किए गये उपेक्षापूर्ण व्यवहार का वर्णन किया है। हरिजन होने के कारण भूतनाथ को कहीं भी कमरा नहीं मिलता है, जहाँ मिलता है वहां से उसके बारे में जानने पर निकाल दिया जाता हैं। इससे वह व्यथित हो जाता हैं। नन्दा द्वारा उसकी रहस्यमयता और मुँह छिपाने का कारण पूछने पर वह कहता है– "अपने किसी दुष्कर्म के कारण नहीं, वरन् अपने ऊपर समाज द्वारा अन–अपराध पड़ने वाली मार की चोटों से बचने के लिए मैं कहीं छिप जाना चाहता था।"[1]

बचपन की एक घटना भूतनाथ के मन में बैठ जाती है। बाँझन टोले के कुएँ से उनके टोले के लोगों द्वारा पानी निकालने के कारण बाँझन टोले के लोगों ने उसके बाबा को मार दिया था। यह बात भूतनाथ के अवचेतन मन में बैठ जाती है। इस घटना से उच्च वर्ग के प्रति उसके मन में घृणा की भावना उत्पन्न होती है। हरिजन होने के कारण उसे स्थान–स्थान पर उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। वह राकेश और नन्दा से कहता है– "मैंने एक अछूत होने के नाते जीवन में पग–पग पर जो अपमान और तिरस्कार सहे हैं, उन्होंने मेरे हृदय को छलनी कर दिया है।"[2]

विश्वविद्यालय में भी भूतनाथ को हरिजन होने के कारण हास्टल में जगह नहीं मिलती है। यहां तक कि जब वह अपनी पत्नी चमेली और बच्चों के साथ एक किराये के मकान में रहता है तो मकान मालिक उसे परेशान करता है। इस प्रताड़ना से उच्चवर्ग के प्रति उसके अन्दर विद्रोह की भावना उत्पन्न होती है। वह राकेश से कहता है– "आखिर हो तो तुम एक मध्यवित परिवार की जंग खायी कील ही, जो लोहे की वज्र श्रंखला में जकड़ी हुई सामाजिक परम्परा

---

1 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 23

2 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 138

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

पर सीधे सच्चे मौलिक और प्रगतिशील दृष्टिकोण से विचार करने को कतई तैयार नहीं हो पाता।.....तुम्हारे समान कायर व्यक्ति सामाजिक परम्परा में तनिक भी दरार देखते ही चक्कर खाकर जमीन पर चारों खाने चित्त गिर पड़ते हैं, और आज के क्रान्तिकारी युग में कहीं क्रान्ति की तनिक भी आभास पाते ही बूरी तरह बौखला उठते हैं।"[1]

समाज में हरिजनों पर अनेक अत्याचार हो रहे हैं। लेखक ने भूतनाथ के माध्यम से इस पर प्रकाश डाला है– "आज भी हम देखते हैं कि हरिजनों की विवशता किस अन्धेर की सीमा तक पहुँच गयी है। गाँव–गाँव से समाचार मिल रहे हैं कि हरिजनों की पूरी बस्ती की बस्ती किस निर्ममता से सवर्णों द्वारा जलायी और ध्वस्त की जा रही है, और शहरों या गाँवों की शिक्षा–संस्थाओं में हरिजन छात्रों की हत्याए की जा रही है।"[2] आगे वह कहता है– "हम हरिजनों को मन्दिर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता, भगवान के दरवाजे हमारे लिए बन्द हैं। वहां भी काला–बाजारी चलती है। मेरे एक साथी ने एक बार हनुमानजी के एक मन्दिर के दरबान को दस–बीस रूपये घूस में दिये तब बड़ी कठिनाई से वह देवता के दर्शन पा सका। वह तो कहो कि दरबान इतनी आसानी से मान गया। वरना अधिकतर दरबान इस कदर 'कट्टर' होते हैं कि रूपया लेकर भी किसी हरिजन भक्त को भीतर प्रवेश करने देना तो दूर, मरने–मारने पर उतारू हो जाते हैं।"[3]

भूतनाथ राकेश और नन्दा की दयनीय हालत देखकर उनकी मद्द करता है। नन्दा के सहृदय व्यवहार से वह प्रभावित होता है– "तुम्हारे स्वभाव की निपट सरलता और तुम्हारी वाणी के माधुर्य से इस कदर प्रभावित हो उठा हूँ कि एक मिनट भी तुम्हारे नैकट्य से बिछड़ने पर मुझे अपने अस्तित्व पर ही सन्देह होने लगता है और मैं अपने को अनन्त शून्य में निरूद्देश्य भटकता और

---

1 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 95

2 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 136

3 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 152

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

बिखरता हुआ पाता हूँ।"[1] नन्दा भी उसकी ओर आकर्षित होती है। वह डॉक्टरनी से कहती है– "मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि उनका प्रेम सभी मनुष्यों के प्रति समान और महान् है। मेरे प्रति भी उनका यही प्रेम है जो मानव–मात्र के लिए है। मैं उनके चरित्र की सभी विशेषताओं से प्रभावित होकर उन्हें चाहने लगी हूँ।"[2]

इस प्रकार जोशी जी ने इस उपन्यास में समाज के निम्न वर्ग के शोषण, उन पर होने वाले अन्यायों व अत्याचारों की ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। उन्होंने भूतनाथ के माध्यम से यह सन्देश दे दिया है कि निम्न वर्ग के लोग अब अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों को सहन नहीं करेंगे, बल्कि उनका प्रतिरोध करेंगे।

कवि की प्रेयसी : 'कवि की प्रेयसी' इलाचन्द्र जोशी के पूर्ववर्ती उपन्यासों से शिल्पविधि में भिन्न है। इसमें इतिहास तथा कल्पना जगत का सुन्दर समन्वय किया गया है। इलाचन्द्र जोशी ने कालिदास के नाटक 'मालविकाग्निमित्रम' के प्रस्तावना भाग के संवाद सूत्र में वर्णित कवि सौमिल्लिक की प्रणयकथा को काल्पनिकता का आधार देकर चित्रित किया है।

सौमिल्लिक के पितामह उज्जयिनी के सम्पन्न श्रेष्ठी थे, जो समुद्र यात्रा से एक सुन्दर विदेशी स्त्री को क्रय कर कनिष्ठा माता का स्थान दिलाते हैं। इससे उनके घर में कलह उत्पन्न होने लगता है। सोमिल उनके प्रति सहज स्नेह भाव अनुभव करता है और उन्हें 'इज्जा' कहकर संबोधित करता है। सोमिल आचार्य जीवदत्त के गुरूकुल में शिक्षा पाकर जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने के लिए देशाटन के लिए निकल पड़ता है। इन्दौर (इन्दपुर) की यात्रा के दौरान उसकी भेंट शिरीषा नामक सुन्दरी से होती है। दोनों में घनिष्ठता बढ़ती है। शिरीषा के अनुरोध पर सोमिल उसके साथ उसकी बहन मदनसेना के भवन

---

1 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 51

2 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 116

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

में जाता है, जो इन्दपुर की नगर–वधु है। मदनसेना सोमिल के व्यक्तित्व से प्रभावित होती है। शिरीषा के अन्दर एक अच्छी अभिनेत्री बनने की इच्छा है; लेकिन वह मदनसेना को इसमें बाधक पाती है। वह सोमिल के साथ भागकर उज्जयिनी पहुँच जाती है। वहाँ सोमिल उसे अपने मित्र प्रचेत वर्मा और उसकी बहन रत्नप्रिया के संरक्षण और उनकी नाट्य मंडली में प्रशिक्षण दिलवाता है। शिरीषा सर्वप्रथम सौमिल्लिक कृत चीरहरणम् में नायिका की भूमिका का मंचन करती है। सोमिल शिरीषा के प्रति अपने प्रेम की बात अपनी इज्जा को बताता है। इज्जा शिरीषा द्वारा राजकुमारी के अभिनय को देखकर अनुमान लगाती है कि वह अवश्य ही कोई राजकुमारी है और वह आग्रहपूर्वक शिरीषा से इस बात को पूछती है। शिरीषा उन्हें बताती है कि वह राजकुमारी ही थी, जो अब अनाथ और असहाय हो गयी थी। अंत में सोमिल और शिरीषा का विवाह हो जाता है।

उपन्यास की अनेक घटनाएँ स्थूल हैं, रोचक हैं और ऐसा जान पड़ता है कि कथा तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। छोटी–छोटी घटनाएँ मानव मन की गहराइयों के चित्रण में सक्षम हैं। सोमिल सरल प्रकृति का निर्द्वन्द्व युवक है। शिरीषा के प्रति उस की स्नेहप्रवृत्ति का कारण यह है कि वह अपनी स्नेहमयी इज्जा के विछोह के कारण उसके स्नेह को अन्यत्र पाना चाहता है। "किसी भी सहृदय युवती में तनिक भी आत्मीयता का आभास पाते ही मुझे तत्काल अपनी विदेशी माता की याद आ जाती और प्रत्येक सुन्दरी और स्नेहमयी नारी का रूप मेरे अन्तर में माँ के पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में सहज ही उद्‌भासित हो उठता था और केवल उसी रूप में मेरा अवारामन रम पाता था मेरे चिर–अनाथ मन को जैसे सारी विश्व प्रकृति में एकमात्र माँ की ही खोज थी।"[1]

कहानी संग्रह : उपन्यासों के अतिरिक्त इलाचन्द्र जोशी ने अनेक कहानियों की रचना भी की। इलाचन्द्र जोशी जी के प्रमुख कहानी संग्रह 'धूपरेखा', 'दीवाली और होली', 'रोमाण्टिक छाया', 'आहुति', 'खण्डहर की आत्माएँ', 'डायरी

---

1 'कवि की प्रेयसी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ –

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

के नीरस पृष्ठ' एवं 'कटीले फूल लजीले काँटे' हैं। स्थानाभाव के कारण उनके सभी कहानियों का जिक्र करना सम्भव नहीं है। फिर भी कुछ प्रमुख कहानी संग्रह में वर्णित कहानियों का वर्णन यहाँ पर किया जा रहा है।

रोमाण्टिक छाया : 1943 में प्रकाशित इस कहानी संग्रह में कुल आठ कहानियाँ हैं। इन सभी कहानियों का निर्माण मनोवैज्ञानिक धरातल पर हुआ है। प्रथम कहानी 'चिट्ठी–पत्री' पत्रात्मक शैली में लिखी गयी एक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ी युवती प्रमीला की कथा है, जो ससुरालियों की प्रताड़ना और पति के लात के आघात से बीमारी के कारण प्राण त्याग देती है। उसके अन्दर एक हीन भावना विद्यमान है। उसकी सहेली मालती उसके पत्र के उत्तर में लिखती है– "निस्सन्देह यह आश्चर्य की बात है कि तुम अंग्रेज छोकरियों के साथ शिक्षा पाने के बाद भी पर्दा–प्रथा का गुणगान करने लगी हो। शायद तुम यह सोचती हो कि तुम्हारा हृदय सचमुच पर्दा–प्रथा की महत्ता स्वीकार करने लगा है। पर यह निरा ढोंग है। तुम्हारा अभिमानी हृदय नाना सांसारिक तथा सामाजिक चक्र में दलित और पिष्ठ होकर अन्त में अपने आप को ठगना चाहता है और नम्रता, दैन्य और विनय की चरम सीमा को पहुँच कर अपने अभिमान के भाव की तुष्टि करना चाहता है।"[1]

'क्रय–विक्रय' कहानी में राजेन्द्र अपने आर्थिक लाभ और नौकरी में उन्नति के लिए अपनी पत्नी मालती को सम्पन्न व्यक्तियों से सम्पर्क बढ़ाने और उनका मनोरंजन करने के लिए प्रोत्साहित करता है, लेकिन जब वह सुरेन्द्र नामक गरीब युवक से स्नेह से दो बातें करती है तो वह उसका विरोध करता है, जबकि उसका पुत्र उसका न होके अवैध सन्तान है। इस पाप को वह सहजता से ग्रहण करता है।

'अपत्नीक' कहानी में भावुक साहित्यकार चन्द्रशेखर तिवारी नारी से दूर भागकर एकांत पसन्द करता है। इस सम्बन्ध में वह शर्मा जी से कहता है–

---

1 'रोमाण्टिक छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ 5

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

"स्त्रियाँ पुरूषों से एक दम अलग रहकर अपना जीवन बितायें और पुरूष स्त्रियों से अलग रहकर दोनों के जीवन की गति स्वभाव से बिल्कुल भिन्न है और होनी चाहिये।"[1] लेकिन एक बार बीमार पड़ने पर उसकी विचारधारा बदल जाती है। यह बात वह बाद में उनको भेले एक पत्र में करता है– "मेरे आकस्मिक प्रस्थान से आप को अवश्य ही आश्चर्य हुआ होगा और बहन जी ने बीमारी की हालत में मेरी जो सेवा (इसे 'सेवा' कहते लज्जा मालूम होती है, उन के स्नेह के लिए क्या शब्द काम में लाया जाय?) की है, उसने मेरे विचारों को जड़ से हिला दिया है। बीमारी और दुर्बलता के हालत में मनुष्य भावुक हो जाता है और तिस पर भी यदि किसी स्त्री का वास्तविक स्नेह प्राप्त हो तो कठिन से कठिन स्वभाव वाले पुरूष की कठोरता मोम की तरह पिघल जाती है, इस बात का अनुभव मुझे पहली बार आपके यहाँ हुआ। स्त्री–जाति के सम्बन्ध में मेरी जो धारणा थी, बहन जी के स्निग्ध मातृ–हृदय ने अपनी स्नेहार्द्र करूणा से उसे मिटा दिया।"[2] शर्मा जी की पत्नी द्वारा की गयी सेवा भावना से प्रभावित होकर नारी के सम्बन्ध में उसकी विचारधारा बदलने लगती है और वह विवाह के लिए तैयार हो जाता हैं। "विवाह के सम्बन्ध में मेरे विचार बदल गये हैं। सन्देह नहीं, तथापि मैंने निश्चय कर लिया है कि जब तक मुझे कोई ऐसी स्त्री न मिले जिसके हृदय में वही उदारता, जिसकी आँखों में वही स्निग्धमाधुर्य, जिसकी वाणी में सरलता, जिसकी गति में मृदु–मन्थर गाम्भीर्य न हो, जैसा बहन जी में मैंने पाया था, तब तक कभी विवाह न करूँगा।"[3]

'किडनैप्ड' कहानी में भ्रात स्नेह से वंचित अभिनेत्री सम्मोहिनी का सभी पुरूषों से सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार का वर्णन है। वह सभी पुरूषों से भाई के समान प्रेम करती है, लेकिन सभी उससे विवाह का प्रस्ताव करते हैं। जिसकी तीखी प्रतिक्रिया उसके मन में होती है। वह बताती है– "बचपन में अपने साथ की

---

1 'रोमाण्टिक छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 43

2 'रोमाण्टिक छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 53

3 'रोमाण्टिक छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 54

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

दूसरी लड़कियों को अपने भाइयों पर स्नेह बरसाते देखकर मेरी यह सहज आकांक्षा मचल–मचलकर रह जाती थी। मैं अपनी सहेलियों के छोटे–छोटे प्यारे–प्यारे भाइयों पर अपने हृदय में उथला हुआ सारा स्नेह उड़ेल देने के लिए सब समय विकल रहती थी, पर अपने भीतर के किसी संकोच के कारण ऐसा करने से रह जाती थी। जब मैं बड़ी हुई तो अपने उस विकृत संकोच पर मैंने ऐसी जबर्दस्ती विजय पाई कि मेरा निस्संकोच भाव दूसरी चरम और अस्वाभाविक स्थिति पर पहुँच गया। मैं अपने से या कुछ बड़े किसी भी सुन्दर और सुशील लड़के को देखती तो उसे अपने भाई की तरह प्यार करने के लिए अधीर हो उठती।"[1] उसकी तीखी प्रतिक्रिया के कारण दो पुरूष आत्महत्या भी कर लेते हैं। अन्त में जब एक अन्य व्यक्ति उसे विवाह के लिए कहता है तो वह केवल इसलिए उससे विवाह करती है कि वह कोई आत्मघाती कदम न उठा ले। इस सम्बन्ध में वह बताती है– "जब और भी दो–एक दुर्घटनाएँ मेरी इस अनोखी और भोली–हाँ भोली, मैं सच कहती हूँ– स्नेह–भावना के कारण हुई तो अन्त में मेरी उस नराधम और नारकीय जीव का उल्लेख किसी भी रूप में करना मेरे लिए शूल की घातक पीड़ा से अधिक कष्टदायी है– जब मेरे हृदय के उसी कोमल और करूण भावना का अधिकारी बनने के बाद एक दिन मुझसे विवाह का प्रस्ताव कर बैठा तो मैंने केवल इस डर से प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि कहीं वह भी कोई आत्मघाती कांड न कर बैठे।"[2] 'रोमाण्टिक छाया' कहानी में प्रेम के असफल होने से उत्पन्न कुण्ठा का वर्णन है। 'रोमाण्टिक छाया' का बालमुकन्द प्रेम में असफल होने के फलस्वरूप आलसी और अपाहिज बन जाता है।

'प्रेम और घृणा' कहानी में असफल प्रेम से उत्पन्न घृणा का वर्णन है। नीलिमा नृपेन्द्र से प्यार करती है, लेकिन नृपेन्द्र का उद्देश्य भोली–भाली लड़कियों को फाँसकर उनके कौमार्य से खेलना है। इस सम्बन्ध में उसका नौकर उसे बताता है– "नृपेन्द्र जी को जिस दिन मैंने पहले–पहल आप के साथ

---

1 'रोमाण्टिक छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 96

2 'रोमाण्टिक छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 99

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

देखा उस दिन से मेरे मन में विश्वास हो गया कि वह शख्स या तो आपके कौमार्य के साथ खेलने के लिए आया है, या मीठी–मीठी बातों से आप पर अपना जाल बिछाकर आपके पिता की सारी संपति पर अधिकार जमाने का एकमात्र उद्देश्य उसके नीच मन में छिपा हुआ है।"[1] नृपेन्द्र द्वारा उसके साथ धोखा करने पर उसका विश्वास समस्त पुरूष जाति से उठ जाता है। नौकर द्वारा उसे सच्चा प्रेम करने की बात पर भी वह विश्वास नहीं करती है और आत्महत्या कर लेती है। यह बात आत्महत्या से पूर्व लिखे इस पंक्तियों से स्पष्ट हो जाती है– "मेरे प्रति तुम्हारे प्रेम की दृढ़ता की बातों पर विश्वास करने को जी चाहने पर भी मैं विश्वास न कर सकी, सारी पुरूष जाति के ऊपर विश्वास हट गया और जीने की कोई इच्छा शेष नहीं रही है।"[2] इस बात का पता चलने पर नीलिमा आत्महत्या कर लेती है।

'फोटो' कहानी का श्याममनोहर रामकली नामक हरिजन लड़की की फोटो देखकर उसकी ओर आकर्षित होता है। प्रारम्भ में तो रामकली उसे अपने यहाँ बुलाकर चाय–पानी पिलाती है। वह श्याममनोहर को अपने हरिजन होने की बात स्पष्ट बताती है। बाद में जब श्याममनोहर उनके यहाँ दुबारा जाता है तो उसके प्रेमी द्वारा दुत्कार दिया जाता है। इस घटना के बाद श्याममनोहर की समझ में आ जाता है कि रामकली ने अपनी मीठी–मीठी बातों से उसको प्रभावित कर उसको चाय–पानी पिलाकर उसका धर्म भ्रष्ट किया है। "प्रारम्भ में कुछ दिनों तक रामकली ने उसकी जो आव–भगत की, आदर–सत्कार किया, वह केवल मीठी–मीठी बातों से उसे बहलाकर उसे चार पिला कर, खाना खिला कर उसे धर्म भ्रष्ट करने के इरादे से किया। शिक्षित हरिजन समाज में पैदा होने के कारण उसके मन में उच्च वर्गों के व्यक्तियों के विरूद्ध बदला लेने की भावना निश्चय ही उग्र रूप में वर्तमान है। इसीलिए उसने उलटे सीधे उपायों से उसे

1 'रोमाण्टिक छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 131

2 'रोमाण्टिक छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 134

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

अपने वश में करके उसका धर्म नष्ट करके उसे दुत्कार दिया।"[1] उसकी पत्नी उमा को एक आदर्श भारतीय नारी के रूप में चित्रित किया है। इस संग्रह की अन्तिम कहानी 'आत्महत्या या खून' का कन्हैयालाल शराब के नशे में 10 वर्ष पूर्व किए गये खून का रहस्य सी.आई.डी. इंस्पैक्टर कृपाशंकर को बता देता है। कन्हैयालाल जो एक विद्यालय में पढ़ाता है, अपने पड़ोस में रहने वाली स्त्री पन्ना की ओर आकर्षित होता है। पन्ना जिसका पति विदेश में है, वह स्वयं उसे फँसाती है। पन्ना का सम्बन्ध अपने नौकर एवं अनेक व्यक्तियों से होता है। एक दिन कन्हैयालाल नौकर और पन्ना को पकड़ लेता है। फलस्वरूप उसके मन में पन्ना के लिए घृणा उत्पन्न होती है और वह उसका खून कर उसके शव को बक्से में बन्द कर देता है। एक हफ्ते बाद वह हमेशा के लिए मेडिकल देकर उस स्थान को छोड़ देता है, लेकिन दो–तीन वर्षों के बाद ही उसे पन्ना की याद आने लगती है और अपने कृत्य पर पछतावा होने लगता है। लगभग 10 वर्ष के बाद वह उसी कमरे में जिसमें उसने पन्ना का खून किया था, किराये पर आ जाता है। तांकि किसी दिन उसे यदि पन्ना का भूत भी मिले तो वह कृतार्थ हो जाये। वहाँ आने पर उसकी मित्रता कृपाशंकर से होती है और एक रात शराब के नशे में अपने द्वारा किये गये इस कुकृत्य को वह कृपाशंकर के सामने खोल देता है। कृपाशंकर अगले दिन दो पुलिस कान्स्टेबलों के साथ उसे गिरफ्तार करने आ जाता है। वह कन्हैयालाल को बताता है कि वह पन्ना का पति है। वह पन्ना की हत्या के बाद लगातार उस पर नजर रखे है और कल रात उस रहस्य को उसके मुँह से सुनकर इस गुत्थी को सुलझाने में सफल हुआ है।

जोशी जी ने इन सभी कहानियों में मनोवैज्ञानिक मान्यताओं को आधार बनाया है। इनके पात्रों का विकास पूर्ण रूप से नहीं हुआ है। उनमें कोई न कोई मनोविकृति पायी जाती है।

---

1 'रोमाण्टिक छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 152

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

खण्डहर की आत्माएँ : इस कहानी संग्रह में आठ कहानियाँ है। 'परिणीता', 'बदला', 'मिस एल्किन्स', 'रात्रिचर', 'उद्धार', 'कापालिक', 'पागल की सफाई', 'विद्रोही'। इन कहानियों में भी जोशी जी ने पात्रों की मानसिक विकृतियों को सामने रखा है। 'परिणीता' में सेवती नामक गूँगी नौकरानी का विवाह के प्रति उत्कट लालसा को चित्रित किया है। एक परिहास–प्रिय युवक द्वारा सेवती से सगाई का नाटक करने और फिर उसी युवक द्वारा परिहास में ही पत्र लिखकर उससे जल्दी ही विवाह करने की बात से वह अत्यधिक प्रसन्न होती है। सच्चाई जानने के बाद भी वह कहती है– "तुम्हारे कहने से क्या होगा? मैं जानती हूँ कि वह मेरे साथ ठठोली नहीं करते और मेरे साथ विवाह करने का उनका सच्चा इरादा है। तुम मेरी चिट्ठियाँ पढ़ दिया करो, बस? और कोई बात मैं तुमसे जानना नहीं चाहती!"[1] पचास वर्ष से भी अधिक की उम्र होने के बाद भी उसको विश्वास है कि वह नवयुवक उससे विवाह करेगा। इसी इन्तजार में एक दिन वह अपने प्राण त्याग देती है।

'बदला' जनार्दन नामक व्यक्ति की वैचित्र्यपूर्ण कथा है, जो अपनी पत्नी द्वारा सभी कमायी को हड़पने व बाद में उसे धोखा देने के कारण वह बदले में विदेश में वेश्याओं के सम्पर्क से लायी गयी बीमारी को उसके शरीर में भी पहुँचा देता है। वह कहता है– "उस हरामजादी ने मेरे साथ इतना बड़ा विश्वासघात किया पर मैंने भी वह बदला चुकाया है कि वह जिन्दगी भर याद करेगी!" "कैसे? मैंने कौतुहलवश पूछा!" "जो 'राजरोग' मैं लड़ाई से लाया था, उसका विष उसके शरीर में भी फैल गया है। हा....हा....हा.....।"[2] 'मिस एल्किन्स' में कथानायक और मिस एल्किन्स नामक एक अंग्रेज लड़की के परस्पर आकर्षण की कहानी है, लेकिन उसकी माँ को एक ऐग्लों–इंडियन लड़के से शादी करने

---

1 'खण्डहर की आत्माएँ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 18

2 'खण्डहर की आत्माएँ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 35

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

के बाद प्राप्त कटु–अनुभूतियों के कारण वह अपनी लड़की से भी कथानायक से दूर रहने की हिदायत देती है।

'रात्रिचर' कहानी रात्रि में डाक को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने वाले देवसिंह नामक एक गूँगे डाक हरकारे की कथा है, जो अपनी और अपनी पत्नी रूक्मा की प्रेम की कहानी को अपने साथियों को बताता है। उसके सभी साथी मेंमों की तरह गोरी पत्नी मिलने पर उसे अत्यधिक भाग्यशाली मानते हैं, लेकिन अन्त में रूक्मा के लँगड़ी होने की बात पर सभी को आश्चर्य होता है।

'उद्धार' सोहना नामक एक वेश्या की कथा है, जो किसी तरह वेश्यालय से भागकर लेखक द्वारा एक अनाथालय में पहुँचती है। वहाँ एक सेठ मैनेजर से मिलकर उससे विवाह करता है। सोहना सेठ से विवाह से पहले दो हजार के गहने बनवा लेती है। विवाह के बाद वह सेठ के उसी आदमी के साथ भाग जाती है, जो उसकी निगरानी के लिए रखा था। 'कापालिक' एक ऐसे व्यक्ति की कथा है, जिसके दो भाई और एक बहन की मृत्यु एक साल के अन्दर हो जाने से मृत्यु से उसके अन्दर भय की भावना उत्पन्न होने लगती है। इसी कारण वह घर से निकलकर एक औघड़बाबा के सम्पर्क में आता है। उसके साथ रहकर वह नरमांस खाने लगता है। औघड़बाबा के प्रभावोत्पादक भाषण से पड़ने वाले प्रभाव के बारे में वह बताता है– "मुझे लगा कि सचमुच मैं इतने दिनों तक अन्धा बना हुआ था और आज गुरु ने एक दिव्य अंजन से मेरी भीतरी आँखें खोल दीं। 'रस' की एक घूँट और लेकर उल्लास पूर्वक 'जय कपाली!' बोलते हुए मैं भुने हुए नर–मांस का एक टुकड़ा लेकर नमक के साथ उसे मिलाकर परम तृप्ति से चबा–चबाकर खाने लगा! वैसा स्वाद मैंने कभी जीवन में किसी दूसरे भोजन में नहीं पाया था।"[1] मृत्यु से उसके भय को भी वह औघड़ बाबा दूर कर देता है।

'पागल की सफाई' का नारायण अपनी मुक्त प्रवृत्ति के कारण पागल

---

1 'खण्डहर की आत्माएँ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 98

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

का वेश रखकर पागलों की तरह जीवन बिताने लगता हे। वह सचमुच पागल नहीं है; इसलिए वह लोगों को डराकर रूपया माँगकर उसे अपने घरवालों को देकर अपने कर्त्तव्य का निर्वहन भी करता है। अपने पागल का वेश रखने के सम्बन्ध में वह बताता है– "मैं मुक्त स्वभाव का आदमी हूँ, और छुटपन ही से किसी भ्झी प्रकार के बंधन में बँधने का आदी नहीं रहा हूँ। पर बंधनों से मुक्त रहने की इच्छा होने ही से आदमी मुक्त नहीं हो जाता। कुछ भाग्यशालियों को छोड़ कर सभी को सांसारिक बंधन बरबस जकड़ लेते हैं। बल्कि मैंने तो यह देखा है कि जो व्यक्ति जितना ही अधिक बंधनों से भागना चाहता है उसे सांसारिक बंधन उतना ही अधिक जकड़ लेते हैं। मेरे साथ भी यही किस्सा हुआ। गृहस्थी के बंधनों में मैं इस हद तक बँध गया कि स्वतंत्र इच्छा नाम की कोई चीज ही मेरे लिये न रही। गृहस्थी के बंधनों को स्वीकार करने के लिए बाध्य होने के कारण ही मुझे नौकरी का बंधन भी स्वीकार करना पड़ा। इन दोनों पाटों के बीच मैं ऐसा पिसता चला गया कि उबरने का कोई रास्ता ही मुझे नहीं दिखाई दिया। मैं चाहता था कि मैं एकदम स्वतंत्र, सभी प्रकार के उत्तरदायित्वों से परिपूर्ण रूप से मुक्त होकर नाचूँ, गाऊँ, हँसूँ, खेलूँ। पर उन बंधनों के कारण मुझे रोने तक की फुर्सत नहीं मिलती थी, हँसना तो दूर की बात थी।"[1] पागलपन के वेश के कारण ही वह अपने ढंग से अपनी जिन्दगी बिताता है और लोगों के प्रति अपनी भड़ास भी निकालता है। वह कहता है– "अब मैं पागलपन की आड़ में उन दुष्टों, बदमाशों, समाज की छाती पर घुन की तरह घुसे हुए और जोंक की तरह चिपके हुए बेईमानों को खुलकर गालियाँ दे सकता हूँ, जिनसे अपनी 'सभ्य' और 'शिष्ट' अवस्था में मैं मन–ही–मन बहुत जलता था, पर झूठे शिष्टाचार वश कुछ कह नहीं पाता था।"[2]

'विद्रोही' का केशरीशरण पाण्डे उच्च वर्ग के प्रति अपने विद्रोह की भावना को व्यक्त करता है। इसके लिए वह राजा–रईसों के यहाँ नौकरी कर

---

1 'खण्डहर की आत्माएँ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 113

2 'खण्डहर की आत्माएँ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 117

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

उनका पैसा फूँकता है और उनके लड़कों को बिगाड़ता है। इस कार्य से उसे सन्तुष्टि मिलती है। शराब पीना और वेश्याखोरी उसकी आदत है इसलिए वह एक समय शिखर से पहुँचने के बाद फिर नीचे ही पहुँच जाता हैं। वह अपनी विचित्र प्रवृत्ति के कारणों को बताता है– "यदि तुम्हें कभी मेरे पिछले जीवन का विश्लेषण करने का अवकाश मिले तो तुम्हारी समझ में आसानी से यह बात आ जायगी कि मैं आजीवन इस वर्ग का विरोधी रहा हूँ, मैंने राजा–रईसों के यहाँ नौकरी करके उनका कभी कोई उपकार नहीं किया। उनका पैसा फूँकने और उनके लड़कों को कुसंगति में फँसाकर भरसक बरबादी की ओर ढकेलने के अलावा मेरी नौकरी का और कोई दूसरा उद्देश्य कभी नहीं रहा है। जिन–जिन कंपनियों में मैने काम किया है वहाँ या तो मैंने गबन किया है या जालसाजी और भरसक प्रत्येक कम्पनी को बदनाम कराने और उसे नये–नये आर्थिक चक्रों में फँसाकर परोक्ष रूप से जड़ खोदने में मैं सहायक सिद्ध हुआ हूँ कि विद्रोह या विरोध प्रकट करने या अपनी प्रतिहिंसात्मक प्रवृत्ति को संतुष्ट करने का ढंग अनोखा और विकृत है।"[1]

डायरी के नीरस पृष्ठ : प्रस्तुत कहानी संग्रह में ग्यारह कहानियाँ हैं। इनमें 'डायरी के नीरस पृष्ठ', 'रक्षित धन का अभिशाप' एवं 'परित्यक्ता' मनोवैज्ञानिक कहानियाँ हैं। 'प्रेतात्मा', 'दो मित्र', 'चौथे विवाह की पत्नी', 'रोगी आदि कहानियाँ सामाजिक हैं। मनोवैज्ञानिक कहानियों में लेखक ने व्यक्ति की मानसिक वृत्तियों का विश्लेषण किया है। सामाजिक कहानियों में विभिन्न सामाजिक विकृतियों एवं स्त्रियों की करूण कहानी को चित्रित किया है।

कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'डायरी के नीरस पृष्ठ' में जोशी जी ने एक व्यक्ति की उसी के माध्यम से उसकी मानसिक वृत्तियों एवं विरल मोहाच्छनावस्था को उद्घाटित किया है। वह अपनी नशे की प्रवृत्ति के बारे में बताता है– "छब्बीस सत्ताईस साल तक एकदम 'सात्विक' जीवन बिताकर अब

---

1 'खण्डहर की आत्माएँ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 162–163

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

तमाखू पीने लगा हूँ, चाय के गुलाबी नशे में रँगने लगा हूँ। इन दो चीजों के बिना मुझे तनिक चैन नहीं रहता। मरे एकाकी, निःसंग तामसिक जीवन में केवल ये ही दो सहृदय साथी मुझे बड़ी मुश्किल से प्राप्त हुए हैं।"[1] यद्यपि उसने विवाह नहीं किया है इसलिए वह गृहस्थ जीवन का स्वाद रखने का भी इच्छुक है– "मैं गृहस्थ जीवन से सदा वंचित हूँ। सोचता हूँ कि यदि इन स्त्रियों के गार्हस्थ्य–चक्र के सुख–दुःखों से किसी रूप में मैं भी जड़ित हो जाता तो एक अननुभूत नये जीवन का स्वाद लेता। पर यह जानता हूँ कि इस जन्म में यह संभव नहीं है।"[2] एक ओर तो वह गृहस्थ जीवन का स्वाद लेना चाहता है, वहीं दूसरी ओर वह सांसारिक चक्र से अलग रहने की बात भी करता है। "असल बात यह है कि मैंने अपनी इच्छा–शक्ति बिलकुल दबा दी है। जिस बहाव में जाता हूँ, उसी में बह जाता हूँ। किसी बात के प्रति मेरे हृदय में घृणा नहीं है, किसी विशेष विषय की उसमें चाह नहीं है। निर्द्वन्द्व, उल्लासकर, संसारचक्र की चिंता से रहित जो कोई भी जीवन जहाँ कहीं भी मुझे मिलता है, उसी को अपनाता हूँ।"[3] जब उसके बचपन की साथी मोहनी उससे मिलने आती है तो उसे अपने पुराने दिनों की मधुर स्मृतियाँ याद आने लगती हैं, लेकिन उसके जाने के बाद वह अपने संसार में ही आनन्द का अनुभव करता है।

'मिस्त्री' कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी एक व्यक्ति की करूण कहानी है, जो पिताजी की मृत्यु के बाद अपने छोटे भाई बलदेव को मेहनत–मजदूरी करके पढ़ाता है। वह खुद आधा पेट खाकर उसे अच्छा खाना खिलाता है। अत्यधिक मेहनत कर उसे बी.ए. एवं वकालत का इम्तहान पास करवाता है। इसके बाद वह उसका विवाह करता है साथ ही अपनी सिफारिश से उसकी नौकरी भी लगाता है। विवाह के बाद उसका एक लड़का होता है, जिसे वह बहुत प्यार करता है, लेकिन एक दिन बच्चे के साथ वह गिर जाता है,

---

1 'डायरी के नीरस पृष्ठ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 10

2 'डायरी के नीरस पृष्ठ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 11

3 'डायरी के नीरस पृष्ठ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 16

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

जिससे बच्चे को चोट लग जाती है। इससे उसका बेटा और बहू उसे घर से निकाल देते हैं। अपनी दुःखद कथा को मिस्त्री स्वयं ही सुनाता है– "अपने कुल में मैं ही पहला आदमी हूँ, जिसने मिस्त्री का पेशा अख्तियार किया है। मेरे बाप–दादा जौहरी थे। पिताजी साल में छः महीने रियासतों में चक्कर लगाकर और बांकी छः महीने घर बैठकर राग–रंग में कमाये हुए रूपयों को उड़ाते थे। उनके पास कितनी पूँजी रही है, इसका ठीक अन्दाज कभी कोई न लगा सका।"[1]

'रक्षित धन का अभिशाप' में ठाकुर रनधीर सिंह अपने धन का राज किसी को नहीं बताते हैं। सम्पूर्ण घर का हिसाब–किताब वही करते हैं। बीमार होने पर उनकी पत्नी और बेटा उनसे धन के बारे में पूछताछ करते हैं, वे ठाकुर रनधीर सिंह का इलाज करने के बजाय उनके बक्से आदि को टटोलने में लगे रहते हैं। इलाज के अभाव में बिना कुछ बताये उनकी मृत्यु हो जाती है। उनकी मृत्यु के बाद अनेक लोगों के नोटिस आते हैं, जिससे पता चलता है कि ठाकुर रनधीर सिंह ने अत्यधिक धन उधार लिया है। उनका बेटा उनके सोने वाले कमरे में अभी भी धन की खोज में लगा रहता है। एक रात्रि वह एक कुदाल लेकर त्रिशूल के निशान बने सतह को खोदता है। खोदते–खोदते वह पसीने से लथ–पथ अपने आप को भूल जाता है। अन्त में उसे एक कलश मिलता है, जिसमें सोने के सिक्के भरे हुए थे, साथ ही उन्हें एक हड्डी भी मिलती है, जिससे उसे भय की अनुभूति होती है। धन के मिलने से वह अत्यधिक बावला हो जाता है। वह उस कलश को वहीं छिपाकर पहले की तरह मिट्टी से ढक देता है और अपना कमरे में आकर आराम करने के इरादे से लेट जाता है। सुबह तक उसकी मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार वह अभिशप्त धन किसी को नहीं मिल पाता है। उसके बाद उसके बच्चे भी निपट गरीबी की हालत में जीवन व्यतीत करते हैं।

---

1 'डायरी के नीरस पृष्ठ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 29

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'रोगी' कहानी में यक्ष्मा के रोगी सुन्दरलाल की मानसिक स्थिति का वर्णन किया है। सुन्दरलाल प्रथम श्रेणी में एम.ए. पास करके पी.सी.एस. की परीक्षा भी उत्तीर्ण करता है। उसके बाद वह एक साल तक किसी नगर में कलक्टर बनता है। उसकी पत्नी श्यामा भी उसके साथ रहती है। वह बुद्धि का प्रखर, मिलनसार व ऐयाश किस्म का है। ऐयासी की मात्रा या वंशगत दोष के कारण वह यक्ष्मा रोग का शिकार हो जाता है। इससे पूर्व उसके दो भाई भी यक्ष्मा रोग के शिकार हो चुके थे। रोग के बढ़ने पर वह श्यामा को साथ लेकर कंप्लीट रेस्ट के लिए घर आ जाता है। घर पर उसके बचपन का मित्र भगवतीचरण उसका इलाज करता है। अपनी जीर्ण दशा के कारण वह अपनी सुन्दर स्त्री श्यामा पर सन्देह करता है। वह सोचता है डॉक्टर और श्यामा उसकी बीमारी के बहाने एक–दूसरे के नजदीक आते जा रहे हैं। श्यामा को देखते ही उसके मन में घृणा की भावना भर जाती है। "उसे ऐसा मालूम होने लगा, जैसे ये दोनों मिलकर किसी इन्द्रजाल की माया से उसकी आँखों में धूल झोंककर उसकी सेवा के बहाने दिन–दिन घनिष्ठता की ओर पाँव बढ़ाते जाते हैं और मन में एक दूसरे से कह रहे हैं– जो आदमी आज नहीं तो कल मर जायेगा, उससे तुम्हारा हमारा क्या सम्बन्ध है? हम तो जीते रहेंगे। तब आओ, आओ, नए मिलन का आनन्द लूटें।"[1]

'एक शराबी की आत्मकथा' में शम्भूनाथ अपने शराब पीने के कारणों को स्पष्ट करता है। वह कहता है– "मैंने शराब पीना कुछ ही महीनों से सीखा है। अक्सर यह कहा जाता है कि लोग कुसंग में पड़कर शराब पीना सीखते हैं और पतन के मार्ग में प्रवेश करने के लिए ही शराब पी जाती है। पर मेरा अनुभव इन दोनों तथ्यों के बिल्कुल विपरीत रहा है। मैंने कुसंग में पड़कर नहीं, बल्कि ऐसे अच्छे व्यक्ति के संग में शराब पीना सीखा है, जिसकी सहृदयता और सच्चरित्रता मुझे अनुपम और अतुलनीय मालूम हुई है। शराब मुझे पतन की ओर

---

1 'डायरी के नीरस पृष्ठ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 60

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

नहीं ले गई है, बल्कि इसने मुझे पतन के गहन गर्त में विलीन होने से बचाया है।"[1] वह बताता है कि विभिन्न पारिवारिक कठिनाइयों से जूझने के बाद एवं माता–पिता और बहन की मृत्यु के बाद वह निपट अकेला हो गया। एक स्थान पर अकेले पड़े रहने में उसकी मानसिक स्थिति सही न रहने के कारण वह घूमने के लिए निकल पड़ता है। लखनऊ में उसे उसका बचपन का साथी रामसरण मिलता है, जिसके साथ वह कुछ दिन रहता है। इन कुछ दिनों में ही रामसरन की पत्नी कमला उसकी ओर आकर्षित होती है और एक रात वह स्वयं उसके कमरे में चली आती है, लेकिन उसके प्रणय निवेदन को शम्भूनाथ ठुकरा देता है। रामसरन इन सब बातों को जानता है। तभी से दोनों शराब पीकर अपने दुःखों को भूलाने की कोशिश करते हैं। लेखक ने शम्भूनाथ के दृढ़ चरित्र को उजागर किया है।

'चौथे विवाह की पत्नी' पत्रात्मक शैली में लिखी गयी रामेश्वरी नामक लड़की के बेमेल विवाह की कहानी है। जिससे उसका विवाह होता है वह पहले ही अपनी तीन स्त्रियों को प्रताड़ित कर उन्हें परलोक पहुँचा चुका है। रामेश्वरी को भी वह प्रताड़ित करता है, लेकिन रामेश्वरी उसका विरोध करती है। वह अपने बच्चे से भी घृणा करती है। फलस्वरूप बच्चे की मृत्यु हो जाती है। बच्चे की मृत्यु के 6 माह बाद उसके पति की भी मृत्यु हो जाती है। रामेश्वरी के लिए वह अत्यधिक धन छोड़कर जाता है। सदैव अभावों में जिन्दगी जीने के कारण जब वह अपने चाचा से 2000 चाँदी के रूपये निकलवाती है तो इतने रूपये देखकर वह अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठती है।

'परित्यक्ता' की श्यामा को उसकी कुरूपता के कारण उसका पति विवाह के समय से ही त्याग देता है, जिससे उसके कोमल मन पर इस बात का गहरा प्रभाव पड़ता है। उसके मन में समस्त संसार के प्रति अभिमान का भाव बढ़ता जाता है। जब शम्भूनाथ उसकी ओर आकर्षित होकर उससे विवाह की

---

1 'डायरी के नीरस पृष्ठ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 64

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

बात करता है, तो वह अपने पूर्व पति से मिलकर गृहत्याग का फैसला करती है और तीर्थ स्थान चली जाती है। शम्भूनाथ को लिखे अपने पत्र में वह उसे बताती है– ".....पर इतना मैं अवश्य आपको जता देना चाहती हूँ कि तब से पतिदेव के प्रति मेरे मन में चौगुनी श्रद्धा बढ़ गई है। मैं उनके साथ नहीं रह सकती, यह निश्चित है, उनके साथ न रहने में ही मेरी भलाई है, यही बात उन्होंने मुझे समझाई और साथ न रहकर भी मेरी आत्मा किस प्रकार परम पवित्र आनन्द से तृप्त रह सकती है, इसका भी मर्म समझाया। तब से मेरे मन में कोई ग्लानि, किसी प्रकार का कोई क्षोभ नहीं रह गया है। मैं वास्तव में परम प्रसन्न हूँ। मैं घर छोड़ रही हूँ। बहुत सम्भव है, वृन्दावन या किसी दूसरे तीर्थ स्थान में चली जाऊँगी।"[1]

'स्वामी आलोकानन्द' में स्वामी का वेश धरे एक हत्यारे की कहानी है, जो पुलिस से बचने के लिए स्वामी का वेश धरकर मुंशी रामस्वरूप के यहाँ डेरा जमा लेता है। रामस्वरूप के यहाँ रहते हुए वह उसके परिवार पर गहरा प्रभाव डालता है। वह चढ़ावा तो स्वीकार नहीं करता बल्कि आये दिन भंडारे आदि का आयोजन कर उनकी सम्पति को खर्च करता है। वह सबको सम्मोहित कर उन पर अपना प्रभाव डालता है। मुंशी रामस्वरूप उससे अत्यधिक परेशान हो जाते हैं, क्योंकि उनके घर के नौकर व सभी सदस्य उनका ध्यान न रखकर स्वामी का गुणगान गाते हैं। लेकिन एक दिन पुलिस आकर उसके गिरफ्तार कर ले जाती है और स्वामी बने उस हत्यारे का पर्दाफाश होता है।

'प्रेतात्मा' में डॉ. बलवीर की पत्नी की करूणापूर्ण कहानी है। सास और ननद के निर्मम अत्याचारों व उसके पुत्र को जहर देकर मारने के कारण वह अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठती है और अन्त में मृत्यु हो जाने के बाद प्रेतात्मा का रूप धारण कर अपनी साँस और ननद की दुःखद मृत्यु का कारण बनती है। सम्पूर्ण कहानी में सास व ननद द्वारा बहू पर किये जाने वाले

---

1 'डायरी के नीरस पृष्ठ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 117–118

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

अत्याचारों का वर्णन है। प्रारम्भ में सुशील लक्ष्मी सास के अत्याचारों से तंग आकर बाद में आत्मरक्षा के लिए प्रेरित होती है। सास व ननद के निर्मम अत्याचार का वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है– "कभी–कभी वाद–विवाद बढ़ जाने पर जब हाथा–पाई की नौबत आ जाती तो सास और ननद मिलकर दोनों ओर से उसे घेर लेती थीं। ननद इस तरफ से उसके झोटे खींचती और सास उस तरफ से, लक्ष्मी छटपटाती, कराहती, गालियाँ देती, शाप उगलती, पर पार नहीं पाती थी। कभी–कभी ऐसा होता कि कौशल्या अकेली लक्ष्मी के दोनों हाथों को पकड़े रहती और सास पीछे से एक चप्पल लेकर पटापट उसके सिर पर पटकती हुई दाँत पीसकर कहती– 'ले ! ले ! ले ! वह चिल्लाती, चीख मारती, दुष्ट बच्चों की तरह वाही–तबाही बकती, पर सब व्यर्थ। अन्त में सास–ननद की ही जीत होती थी।"[1] सास की निर्ममता को भी प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया है। उसकी सास लक्ष्मी के बच्चे को भी जहर देकर मार डालती है। मरणासन्न लक्ष्मी से बोले उसके इन शब्दों से उसकी क्रूरता का पता चलता है– "इतने दिनों के बाद अन्त में सदा के लिए बहू से छुटकारा पाने की निश्चित आशा से उसके मुख में हर्ष का उल्लास समाता नहीं था, जो दर्शकों को अत्यन्त भयावह और विरक्त लगता था। लक्ष्मी निरतिशय विवशता की चरम म्लान दृष्टि से सास की ओर देख रही थी। सहसा मृत्यु की उस भीषण जड़ निस्तब्धता को अत्यन्त बीभत्स रूप से भंग करती हुए बुढ़िया मरणासन्न बहू को लक्ष्य करके अत्यन्त विकृत स्वर में बोल उठी– अब क्या देखती है? अब तू मेरा कुछ नहीं कर सकती। देती क्यों नहीं अब गाली? अभागिनी, अपने कुकर्मों का फल भोगने के लिए अब तू नरक को जा रही है। यमदूत अभी आते ही होंगे।"[2]

'गोदावरी की काशी यात्रा' गोदावरी नामक स्त्री की करूण कहानी है, जिसका पति लापता है। सास और अपनी अम्माँ के व्यंग्य वाणों से आहत होकर वह अपने काका रामदीन व चाची कमला के साथ काशी यात्रा पर जाती है और

---

1 'डायरी के नीरस पृष्ठ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 148–149

2 'डायरी के नीरस पृष्ठ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 155–156

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

वहीं उसकी मृत्यु हो जाती है। 'जारज' रामप्रसाद नामक व्यक्ति की कथा है। उसके जन्म की घटना रहस्यपूर्ण है। उसका विवाह मोहिनी से होता है, लेकिन विवाह के प्रथम दिन से ही रामप्रसाद के नपुंसकत्व के कारण वह उससे घृणा करने लगती है और अन्य पुरूषों की ओर आकर्षित होती है। ज्यों–ज्यों मोहिनी की घनिष्ठता बाहरी व्यक्तियों से बढ़ती जाती है, त्यों–त्यों रामप्रसाद का आकर्षण भी बढ़ते जाता है। उसके मृत्यु की घटना अत्यन्त रहस्यपूर्ण है। लोगों के अनुसार मोहिनी डॉक्टर निहालचन्द के साथ मिलकर उसे संखिया दे देती है। श्मशान से उसका शव गायब होना और फिर दस–बारह वर्ष बाद एक भंगी के रूप में विधवा आश्रम में उपस्थित होना, रात्रि में मोहिनी को रामप्रसाद के पूर्व रूप में दिखायी देना और फिर दूसरे दिन से गायब हो जाना उसकी मृत्यु को रहस्यपूर्ण बनाते हैं। इस घटना के सोलहवे–सत्रहवे दिन मोहिनी की भी मृत्यु हो जाती है।

कँटीले फूल लजीले काँटे : सन् 1957 में प्रथम बार प्रकाशित इस कहानी संग्रह में आठ कहानियाँ हैं। 'डॉक्टर की फीस', 'प्लैनचेट', 'रूक्मा', 'अंधी गलियाँ', 'क्रय–विक्रय', 'किड्नैप्ड', 'सरदार' और 'रेल की रात'। इन कहानियों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं का चित्रण हुआ है। संग्रह की प्रथम कहानी 'डॉक्टर की फीस' में वेश्या जीवन की करूण कथा है। श्यामलाल जमुना को सुनहरे सपने दिखाकर बम्बई भगा ले जाता है और कुछ समय पश्चात उसे वेश्यावृत्ति के धन्धे में धकेल देता है। उसकी सारी कमाई को वह शराब में खर्च कर देता है। यहाँ तक कि उसकी बीमार बच्ची की दवा के लिए जुटाये रूपयों को भी श्यामलाल छीन कर ले जाता है।

'प्लैनचेट' वकील शंकर दयाल की पत्नी ब्रजेश्वरी की कहानी है। ब्रजेश्वरी मृत्यु के बाद प्लैनचेट के माध्यम से स्वप्नावस्था में अपने पति को अपने मर्त्यलोक की स्मृतियों से अवगत कराती है। पति की उपेक्षा के कारण वह पड़ोस में रहने वाले राधामोहन के व्यक्तित्व से प्रभावित होती है। एक दिन ताँगे

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

में चढ़ते समय गिरते वक्त राधामोहन द्वारा पकड़ने से उसके दिल में फड़फड़ाहट सी होती है और उसके अन्दर एक अज्ञात बीमारी घर कर जाती है। अच्छे डॉक्टर द्वारा इलाज कराने के बाद भी दो साल के बाद उसकी मृत्यु हो जाती है।

'रूक्मा' कहानी रूक्मा नामक लड़की की करूण कथा है। उसका विवाह उससे ढाई गुना अधिक उम्र के व्यक्ति से होता है। वह उसे बम्बई ले जाता है। वहाँ एक वर्ष तक तो सब ठीक–ठाक चलता है, लेकिन उसके बाद ऊपरी आमदनी बन्द हो जाने के बाद उसका पति उस पर अत्याचार करने लगता है। 'अंधी गलियाँ' कहानी एक भिखारिन का अपने धन्धे के प्रति लगाव को दर्शाता है। सल्लो जो एक भिखारिन है, वह चाहती है कि उसका लड़का भी अपंग पैदा हो ताँकि वह लोगों की सहानुभूति प्राप्त कर भीख मांग सके। इसके लिए वह अपने स्वस्थ्य बच्चे को अफीम पिलाकर सुला देती है और लोगों की संवेदना प्राप्त कर अधिक पैसा प्राप्त करती हैं। अफीम पिलाने के कारण वह जल्दी ही मर जाता है। उसके दूसरे बेटे को जब चिम्मन का मामा आँखों में सुई चुभाकर अन्धा कर देता है तो पहले तो उसे दुःख होता है, लेकिन बाद में जब उसको साथ लेकर वह भीख माँगने निकलती है तो उसे लोगों की अधिक संवेदना प्राप्त होती है। इससे उसे अपना बच्चा अमूल्य लगने लगता है।

'सरदार' कहानी में डॉ. प्रतापसिंह के अत्याचारों व अन्यायों के फलस्वरूप डाकू बने लोगों की कथा है, जिसका प्रमुख एक सरदार है और उस दल का उद्देश्य गरीबों व अत्याचार पीड़ितों की मद्द करना है। सरदार डॉ. प्रतापसिंह की लड़की अर्पणा को उसके पिता द्वारा किये गये अत्याचारों से अवगत कराकर उसे अपने पिता द्वारा किये गये अत्याचारों का प्रायश्चित करने को कहता है। इसके लिए वह उससे सामाजिक सेवा करने के लिए कहता है, लेकिन अर्पणा अपने गले में फाँसी लगाकर आत्महत्या कर लेती है, यही उसका प्रायश्चित है।

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'रेल की रात' कहानी में गाँधीवादी सिद्धान्तों के पीछे चलकर अपने माँ–बाप व पत्नी को खो देने वाले महेन्द्र नामक व्यक्ति की कथा है। रेल की यात्रा के दौरान वह अपने साथ सफर करने वाले एक सज्जन की पत्नी की ओर आकर्षित होता है। जीवन में अनेक स्त्रियों के सम्पर्क में आने के बाद भी उसे आज का अनुभव अपूर्व तथा अनुपम लगता है।

निबन्ध और समालोचना : इलाचन्द्र जोशी के निबन्ध और समालोचना सम्बन्धी लेख 'साहित्य सर्जना', 'विवेचना', 'विश्लेषण', 'साहित्य चिन्तन', 'शरत व्यक्ति और कलाकार', 'रवीन्द्रनाथ', 'देखा–परखा' तथा 'नए विचार और नई दृष्टि' में संकलित हैं। स्थानाभाव के कारण इनमें से कुछ प्रमुख संकलनों का वर्णन यहाँ पर किया जा रहा है।

साहित्य सर्जना : 'साहित्य सर्जना' इलाचन्द्र जोशी जी का प्रथम निबन्ध संग्रह है, जिसमें विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में छपने वाले साहित्य लोचन सम्बन्धी लेखों का संकलन किया गया है। इसमें कुल सोलह निबन्ध हैं। प्रथम लेख 'साहित्य कला और विरह' में लेखक ने स्पष्ट किया है कि कला का मूल आधार विरह का भाव है। विरह केवल उसी बात पर हो सकता है, जिससे मानव का सम्बन्ध रहता है। "जिस बात से मनुष्य के व्यक्तिगत हृदय का सम्बन्ध नहीं रहता, उसमें विरह की व्याकुलता का अनुभव नहीं किया जा सकता।"[1] 'कला और नीति' नामक लेख में कला का मूल उद्देश्य नीति को न मानकर सत्य, सौन्दर्य तथा मंगल की भावना का विकास करना बताया है।

'काव्य में अस्पष्टता तथा रूपक रस' में कविता के बारे में बताते हुए लेखक लिखता है कि कविता में तात्कालिक रस की प्राप्ति होना आवश्यक नहीं है, क्योंकि एक कविता में कवि की साधना होती है; इसलिए रसहीन काव्य की उपेक्षा करना या उसे अस्पष्ट करार दिया जाना न्यायंगत नहीं है। "श्रेष्ठ कविता

---

1 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 8

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

का पहला गुण अस्पष्टता है।"[1] 'भावुकता और भावज्ञता' में लेखक ने बताया है कि भावुकता में केवल कल्पना नहीं होनी चाहिए बल्कि उसका आधार वास्तविक सत्य होना चाहिए, जिसका उद्‌गम् मानव की अर्न्ततम अनुभूति से हो। इसलिए एक कवि को भावुक न होकर भावज्ञ होना चाहिए।

'छोटी कहानी की विशेषता' लेख में छोटी कहानी की विशेषता बताते हुए वे लिखते हैं कि छोटी कहानी की विशेषता यह है कि उसमें व्यक्ति की प्रतिदिन की साधारण जीवन की वास्तविक वेदना यथार्थ रूप में प्रकट हो सके। "कहानी के मूल भावों का सम्बन्ध हृदय से होना चाहिए, मस्तिष्क की कूट बुद्धि से नहीं। उसका उद्‌देश्य रसावेग (Emotion) के उभाड़ने का होना चाहिए, भिक्षावृत्ति को जागरित करने का नहीं उसमें कामनी की कमनीयता और समुद्र की गम्भीरता होनी चाहिए, पुरूष की रूक्षता और पहाड़ की कठोरता नहीं। वह सत्तात्मक होनी चाहिए, छायात्मक नहीं।"[2]

'हमारे राष्ट्र का भावी साहित्य और संस्कृति' लेख में वर्तमान संस्कृति के सन्दर्भ में लेखक लिखता है कि देश की वर्तमान संस्कृति तनिक भी गर्व करने वाली नहीं है। हमें अपनी प्राचीन संस्कृति के आदर्शों को देखना होगा। उनके अनुसार यदि राष्ट्र की संस्कृति को उन्नत बनाना है तो हमें पाप, पुण्य, अंधकार, आलोक सभी तत्वों को अपनाना होगा और उन तत्वों से गलत बातों को न लेकर ज्ञान, प्राण व शक्ति जैसे भावों को ग्रहण करना होगा वे लिखते हैं– "यदि गन्दगी में भी हमें ज्ञान, प्राण और शक्ति का बोध होता है, तो निःसशय होकर उसकी जड़ खोदनी होगी।"[3] 'जन साधारण के साहित्य का आदर्श' लेख में इलाचन्द्र जोशी ने साहित्य और कला में व्यक्तिगत चेतना को महत्व देने की बात कही है।

---

1 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 21

2 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 43

3 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 53

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'प्रगति और दुर्गति' लेख में लेखक लिखता है कि एक कलाकार तुच्छतम् व्यक्ति के भीतर स्थित अपनेपन की गौरवमयी रूप को चित्रण करें। यदि वे केवल अपनी कला में शोषित वर्ग की व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन बनाती है, तो वह प्रगति न कहलाकर घोर दुर्गति ही कहलायेगी। कालिदास का 'मेघदूत' की रचना का उद्देश्य और उसके अन्दर छिपे हुए सुन्दर भावों का वर्णन 'मेघदूत का रहस्य' लेख में वर्णित है। 'मेघदूत' में केवल प्राकृतिक सौन्दर्य का ही वर्णन नहीं है, वरन् इसमें कालिदास ने नर–नारी के उत्कट प्रेम का चित्र खीचकर उसके विभिन्न प्रतिरूपों को चित्रित किया है। प्रकृति के सौन्दर्य के भीतर इस अनन्त प्राण की खोज करना ही मेघदूत रचना का प्रमुख उद्देश्य रहा है। 'साहित्य सम्बन्धी कतिपय तथ्य' में आदर्श को परिभाषित किया है। "मानवी आत्मा की महत्तम वृत्तियों का विकास जब पूर्णता प्राप्त कर लेता है तब वह वृत्तियाँ जिन–जिन स्वरूपों में अपने को व्यक्त करती हैं वे ही आदर्श कहलाये जाते हैं।"[1] एक श्रेष्ठ कवि का उद्देश्य मनुष्य की महत्तम शक्तियों का उद्घाटन करना है। शेक्सपीयर के प्रमुख नाटक 'हैमलेट' की विशेषताओं का वर्णन 'हैमलेट' लेख में किया गया है। उनके अनुसार चिरन्तन दुःखलीला का वर्णन जैसा 'हैमलेट' में हुआ है, वैसा अन्य किसी में नहीं हुआ है। पाठक हैमलेट की वेदना को अपनी ही वेदना समझते हैं। हैमलेट की प्रसिद्धि का यही मुख्य कारण है।

'मानवधर्मी कवि चण्डीदास' में लेखक ने चण्डीदास के अमर प्रेम को व्यक्त करते हुए बताया है कि चण्डीदास क्रान्तिकारी व समाजसुधारक थे। उनका धर्म मनुष्य धर्म था। मनुष्य को वे सर्वोपरि मानते थे। 'कामायनी' में 'कामायनी' के केन्द्रगत सन्देश को उजागर किया है। लेखक लिखता है– "शाश्वत सत्य की चिर–पुरातन धारा के आधार पर कवि ने एक ऐसे सुन्दर रूपक का निर्माण अत्यन्त मनोरम रूप से किया है जो आधुनिक सभ्यता की

1 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 90

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

संघर्षमयी विषमता और वर्तमान संसार के प्रभुत्ववादी युग में फैली हुई विद्रोहात्मक अशांति के भीषण चक्रजाल का यथार्थ निर्देशन कराता है और साथ ही हमें इस सर्वनाशी विषमता के परे उठकर समरसता के पुण्य प्रकाश का अमर पथ–प्रदर्शित कराता है।"[1]

'शरत्चन्द्र की प्रतिभा–1' एवं 'शरत्चन्द्र की प्रतिभा–2' प्रख्यात बंगाली साहित्यकार शरत्चन्द्र की प्रमुख कहानियों की विशेषताओं का वर्णन किया गया है। उन्होंने जीवन की कठोर वास्तविकता की अवहेलना न करके उसकी गहन अनुभूति को अपनी रचनाओं में उतारा है। अन्तिम लेख 'साहित्य में दुःखवाद' में साहित्य में वर्णित करूण रस की चर्चा की गयी है। किस प्रकार साहित्य में सुख और दुःख, अन्धकार और प्रकाश अपना प्रभाव डालते हैं। "अन्धकार तथा विषाद विश्व–प्रकृति के सौन्दर्य में स्थिरता तथा गम्भीरता का भाव ला देते हैं। कवि लोग भले ही दुःख की यातना पर केवल उसी की खातिर मर मिटे, किन्तु आनन्द के भाव में पूर्णता प्राप्त करने में ही उसकी सार्थकता है। आनन्द–विषाद, पुण्य–पाप, आलोक–अन्धकार, जीवन–मरण ये सब पूर्ण सत्य के विभिन्न रूप हैं। एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। एक भाव प्रतिक्षण मनुष्य को कर्म के लिए प्रेरित कर रहा है। एक चंचल है दूसरा स्तब्ध। एक शक्ति है दूसरा शिव।"[2]

देखा–परखा : 'देखा परखा' निबन्ध संग्रह में इलाचन्द्र जोशी जी के 11 निबन्ध संकलित हैं। 'आज का साहित्य' में लेखक ने साहित्य के क्षेत्र में नित–नवीन प्रयोग को चित्रित किया है। आज के हिन्दी साहित्य का स्वरूप निरन्तर परिवर्तित होता जा रहा है। "हिन्दी साहित्य में आज जो एकदम नया परिवर्तन देखते हैं, उसके मूल में तीव्र गति से परिवर्तित होने वाली नयी सामाजिक परिस्थितियाँ ही हैं।"[3] साहित्य के क्षेत्र में पुरानी मान्यताओं को महत्व

---

1 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 142

2 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 178

3 'देखा–परखा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 90

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

न देकर अभिनव प्रयोग हो रहे हैं। कविता, कहानी, आलोचना आदि में विविधता के दर्शन हो रहे हैं। कविता छन्द–बन्धन से मुक्त हो चुकी है। कथा साहित्य में पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव दिख रहा है। नाट्य कला में यद्यपि प्रगति नहीं हुई है, लेकिन रेडियो के माध्यम से उसमें विकास हो रहा है। लेखक का मत है कि इन पाश्चात्य प्रवृत्तियों के अनुसरण को छोड़कर परम्परागत विधि को अपनाना होगा, तभी साहित्यिक प्रगति हो सकती है।

'छायावादी छाया और प्रकाश' में लेखक ने छायावादी युग की पृष्ठभूमि और छायावाद के प्रमुख कवियों का वर्णन किया है, साथ ही लेखक ने अपनी कविताओं 'राजकुमार', 'विजनवती', 'दमयन्ती', 'नरक–निर्वारणी', 'महाश्वेता', 'मायावती', 'शकुन्तला' आदि कविताओं पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए बताया है कि 'विजनवती' की कविताएँ छायावादी नहीं हैं बल्कि उसमें नया रस भरने का प्रयत्न लेखक ने किया है। 'मनोवैज्ञानिक विश्लेषण' नामक लेख में लेखक ने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के सम्बन्ध में फ्रायड के मनोविश्लेषण, एडलर के वैयक्तिक मनोविज्ञान तथा युंग के वैश्लेषिक मनोविज्ञान का वर्णन किया है। उन्होंने तीनों मनोविश्लेषकों का एक ही लक्ष्य बताया है–अवचेतना की अन्ध–शक्तियों में सन्तुलन पैदा करना।

'भिन्नरूचिहि लोकः' निबन्ध में लेखक ने बताया है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसकी रूचि के अनुसार ही कोई वस्तु महत्वपूर्ण होती है। यह आवश्यक नहीं कि जो वस्तु एक व्यक्ति को अच्छी लगे वह जरूरी नहीं कि दूसरे व्यक्ति को भी अच्छी लगे। इस रूचिभेद में भी अन्तर पाया जाता है। "कोई भी साहित्य सर्जक, साहित्यलोचक या पाठक यह दावा नहीं कर सकता है कि एकमात्र उसी की रूचि साहित्यिक मूल्यांकन की अन्तिम कसौटी है।"[1] इस सम्बन्ध में जोशी जी ने कालिदास और घटखर्पर के विचारों को व्यक्त किया है। रूचि में साम्यता न होने से आलोचक भी एक–दूसरे के शत्रु हो जाते हैं। रूचि वैचित्र्य के सम्बन्ध

1 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 46

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

में लेखक कालिदास के दृष्टिकोण को साफ बताते हैं– "उनका कहना था कि लोग अपनी वैयक्तिक मानसिकता के अनुसार किसी विशेष प्रकार के सौन्दर्य तत्व या रस तत्व को पसन्द करते हैं, पर योग्य परीक्षकों को सभी मानसिक संस्कारों के ऊपर उठकर उन सभी महत्वपूर्ण सौन्दर्य या रस तत्वों का समुचित मूल्यांकन तटस्थ दृष्टि से करना चाहिये।"[1] इसी प्रकार साहित्य में भी किसी रचना को रस युक्त या किसी को रसहीन नहीं कहा जा सकता, क्योंकि भिन्न–भिन्न रूचि के कारण पाठक को किसी भी रचना में रस मिल सकता है। 'साहित्य में वैयक्तिक कुंठा' लेख में कुंठित प्रवृत्ति के व्यक्ति का वर्णन करते हुए बताया है कि वैयक्तिक कुंठा आधुनिक सभ्यता की देन है। व्यक्ति के भीतर चलते रहने वाले ये द्वन्द्व सामाजिक प्रगति में बाधक होते हैं। एक साहित्यकार इन द्वन्द्वों का विश्लेषण कर उनके मूल कारणों की खोज करता है और उनके निराकरण के लिए उपयुक्त उपाय सुझाता है। वैयक्तिक कुंठा की प्रतिक्रिया दो रूपों में होती है– पहली प्रवृत्ति में व्यक्ति जीवन से हारकर जड़ बन जाता है और उसमें उबरने की शक्ति बिल्कुल भी शेष नहीं रहती, दूसरी प्रवृत्ति में व्यक्ति में आत्मविद्रोह की भावना जन्म लेती है। "आत्म–विद्रोह अशक्तता, खीझ और हताश मनःस्थिति की उपज है जो अपने चारों ओर के वातावरण को अपने भीतर के तेजाबी विष से जलाने और गलाने, स्वस्थ प्रवृत्तियों को कुचलने और विकृत प्रतिहिंसात्मक प्रवृत्तियों का नंगा खेल–खेलने में ही जीवन की सार्थकता मानता है।"[2] यदि इस कुंठा को समझा जाय तो इसको जीवन के स्वस्थ विकास के लिए एक उपयोगी अस्त्र के रूप में काम में लाया जा सकता है।

'साहित्यिक ख्याति और उसका मूल्य' में उन रचनाओं एवं आलोचकों पर व्यंग्य कसा है जो क्षणिक प्रसिद्धि के लिए किसी निकृष्ट कृति की प्रशंसा करते है, लेकिन ऐसी ख्याति ज्यादा देर तक स्थायी नहीं रहती। प्रतिभाशाली व्यक्ति की वास्तविक ख्याति दीर्घकाल तक रहती है; भले ही वह ख्याति कृ

1 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 55–56

2 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 66

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

तिकार को मृत्यु के बाद मिले। 'भावी साहित्य और संस्कृति' में साहित्य के मूल आदर्श को समझने पर बल दिया गया है। पूरातन संस्कृति को अपनाने पर बल देते हुए वे लिखते हैं– "हमारे पूर्वजों ने जिस उज्ज्वल प्रतिभापूर्ण जीवन का महत् आदर्श, जिस अमर संस्कृति का श्रेष्ठ निदर्शन हम लोगों के लिए छोड़ दिया है, उसी को फिर से सम्पूर्ण आत्मा से अपनाने का प्रस्ताव मैं आप लोगों के मनन के लिए उपस्थित करता हूँ।"[1] यदि हमें उत्तम संस्कृति के बीज बोने हैं तो हमें पाप–पुण्य, अन्धकार–आलोक सभी तत्वों को अपनाना होगा और उनसे ज्ञान और शक्ति को संचित करना होगा।

'साहित्य में वैयक्तिक स्वतंत्रता बनाम सामाजिक चेतना' नामक निबन्ध में प्राचीन समय व वर्तमान समय के सन्दर्भ में वैयक्तिक चेतना व सामाजिक चेतना के परस्पर सम्बन्ध को बताया गया है। सभ्यता के प्रारम्भ से ही व्यक्ति की सहज एवं विश्रृखल आदिम प्रवृत्तियों पर कठोर नियन्त्रण लगाकर सामाजिक चेतना का आरम्भ हुआ, उत्तरोत्तर इसमें विकास होता गया। "भोग को त्याग द्वारा नियंत्रित करने और वैयक्तिक प्रवृत्तियों को सामाजिक अनुशासन द्वारा संयमित करने के आदर्श की परम्परा इस देश में युगों तक अक्षुण्य बनी रही। हजारों वर्षों की सांस्कृतिक प्रगति के बाद भी सामाजिक चेतना के विकास और वैयक्तिक भावनाओं के नियंत्रण के आदर्श में तनिक भी कमी नहीं आयी बल्कि वह उत्तरोत्तर विकसित होता चला गया।"[2] वैयक्तिक चेतना को लाभकारी मानते हुए वे लिखते हैं– "स्वस्थ सामाजिक चेतना के साथ सापेक्षता में बँधी हुई वैयक्तिक स्वंतत्रता सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दोनों दृष्टियों से हितकारी है।"[3] 'पंत की कविता में त्रिविध चेतना' नामक निबन्ध में लेखक ने सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य में वर्णित तीन प्रकार की चेतना– जाग्रत चेतना, स्वप्न चेतना, तथा सुषुप्त चेतना का उल्लेख किया है।

---

1 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 97

2 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 87

3 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 94

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'रहीम और उनकी कविता' में रहीम द्वार रचित काव्य का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है। रहीम की महत्ता लेखक को अपने स्कूली जीवन से ही ज्ञात हो गयी थी, सामन्ती युग के कवि होने पर भी जन–साधारण के प्रति वे सहृदय भाव रखते थे। अकबर के शासनकाल में वे एक प्रतिष्ठित पद पर थे, लेकिन अकबर की मृत्यु के बाद जहाँगीर के दरबार में उनकी कोई प्रतिष्ठा नहीं रह गयी थी। एक राजनीतिक षडयन्त्र के तहत जहाँगीर ने उसे गिरफ्तार कर कारागार में डाल दिया। कारागार से मुक्त होने के बाद व चित्रकूट पहुँचे, चित्रकूट में उनकों बड़ी शान्ति मिली। उनके सहज सरल सूक्तियों में गहरा भाव छिपा हुआ है। "रहीम की सहज, सरल सूक्तियाँ कालिदास की सूक्तियों की तरह ही प्रीति–मधुर रस से भरपूर हैं, उनका नीति सम्बन्धी प्रत्येक दोहा केवल एक शुष्क उपदेशोक्ति नहीं है, वह जीवन की किसी गहरी अनुभूति के रूप से भरी एक मंजरी है। अतएव अपने सरल उपदेशों तथा सुन्दर सूक्तियों से भी वह बहुत बड़े सिद्ध होते हैं।"[1] 'बाण चरित' में इलाचन्द्र जोशी ने संस्कृत के महान कवि वाण द्वारा रचित दो प्रसिद्ध रचनाओं 'हर्ष चरित' और 'कादम्बरी' का वर्णन किया है। ये दोनों रचनाएँ अधूरी ही रह गयी। 'कादम्बरी' को वाण की मृत्यु के बाद उनके पुत्र ने पूरा किया, लेकिन 'हर्ष चरित' आज तक अधूरा ही है। लेखक के अनुसार वाण ने 'हर्ष चरित' में हर्ष के चरित को अधूरा छोड़कर अपने चरित को पूरा उजागर किया है। "व्यक्तिगत रूप से मेरा तो यह मत है कि हर्ष–चरित लिखना वाण के लिए केवल एक विवशता–जनित बहाना था। वास्तव में उसे स्वयं अपना चरित लिखकर अपने को हर्ष से भी महान और उसकी अपेक्षा अधिक स्थायी कीर्ति का भाजन सिद्ध करने की प्रेरणा हुई।"[2] वाण के जन्म, स्वभाव एवं चरित्र की सभी बातों का वर्णन उन्होंने हर्ष चरित में किया है। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे हर्ष से बदला लेना चाहते थे। हर्ष द्वारा प्रथम मिलन पर किये गये अपमान का बदला लेने के कारण ही वाण ने स्वयं

---

1 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 122

2 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 125–126

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

अपने चरित्र को अधिक उभारा। हर्ष चरित पूरा न लिखने का कारण स्पष्ट था कि वाण की इच्छा उसको पूरा करने की नहीं थी। उन्होंने वाण के अनेक कार्यों का वर्णन भी हर्ष चरित में नहीं किया है। "हर्ष के पराक्रम, वदान्यता, सांस्कृतिक रूचि, धार्मिक कार्य आदि का कोई परिचय हमें इस रचना से प्राप्त नहीं होता। इसीलिये मैं कह रहा था कि वाण ने हर्ष–चरित से अधिक वाण–चरित के महत्व की स्थापना की।"[1]

नए विचार नई दृष्टि : इस निबन्ध संग्रह में बारह निबन्ध हैं, जिनमें सात निबन्ध 'देखा–परखा' में भी संकलित हैं। अन्य निबन्धों में 'युग–साहित्य', 'बन्दी साहित्य', 'हिन्दी के आलोचना साहित्य का भविष्य', 'अस्तित्ववाद का खोखलापन' एवं 'हिन्दी नवलेखन' हैं। प्रथम निबन्ध 'युग साहित्य' में लेखक ने प्रगतिवादी लेखकों द्वारा अपनाये जा रहे साहित्य के सम्बन्ध में अपने विचारों को व्यक्त किया है। उनके अनुसार प्रगतिवादी जिस रूसी साहित्य को अपना रहे हैं, वह विनाशात्मक है। अठारहवी शताब्दी के अन्त में रूसी साहित्य में घृणा, विद्वेष, प्रतिहिंसा और उच्छृंखलता की भावना थी वहीं आज हमारे साहित्य में दिखाई देने लगा है। साहित्य में यद्यपि विभिन्न युगों के साहित्य का प्रभाव पढ़ता है, लेकिन यह प्रभाव युगीन साहित्य के वाह्य रूप में ही पढ़ता है, आन्तरिक रूप में नहीं। "अमर कथाकार चिरकाल से अपने–अपने युग की भावधाराओं की बाढ़ में कभी बहे नहीं हैं। उन्होंने युग के प्रभाव को अपनी रचनाओं के बाहरी ढाँचों तक सीमित रखा है बस। उसके आगे उन्होंने उसे बढ़ने नहीं दिया है।"[2] उनके अनुसार साहित्य के मूल उपादान में युग का प्रभाव पढ़ने से उस युग और साहित्य का विनाश अवश्य होता है, क्योंकि युग भावनाएँ फैशन की तरह अस्थायी और अस्थिर होती हैं। इसलिए नये साहित्यकारों को इससे सावधान रहना चाहिए।

---

1 'साहित्य सर्जना' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 143–144

2 'नए विचार नई दृष्टि' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 73

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'बन्दी साहित्य' में वर्तमान साहित्य पर राजनीति के प्रभाव को चित्रित किया गया है। जिस साहित्य सृष्टा को किसी जमाने में सामाजिक विचारधारा के क्षेत्र में महासम्राट का पद प्राप्त था, लेकिन आज वह राजनीतिक महाप्रभुओं का दास बना हुआ है। "वेदकाल में साहित्यिक ऋषि, कवि और मनीषी केवल कोरे गायक या साहित्य सृष्टा ही नहीं थे, बल्कि राजनीतिक विधानों तथा सामाजिक अनुशासनों के निर्माता भी थे।"[1] आज की संकीर्ण व स्वार्थपरायण राजनीतिक व वैज्ञानिक जीवन ने व्यक्ति को एकाकी कर दिया है। अपनी प्रगति को वह समस्त विश्व की प्रगति मानने लगा है। मानवता आज दानव के पंजों के नीचे दबी पड़ी है। लेखक का विश्वास है कि साहित्य संकट की यह स्थिति अवश्य ही बदलेगी और प्राचीन विद्वानों द्वारा साहित्य कलाकार को ऋषि, मनीषी और क्रांतिदर्शी की उक्ति निकट भविष्य में सत्य सिद्ध होगी। इसलिए साहित्यकार को हीनता की भावना को त्यागकर आत्म–विश्वास के साथ अपने क्षेत्र में आ डटना चाहिए।

'हिन्दी के आलोचना साहित्य का भविष्य' निबन्ध में लेखक ने हिन्दी आलोचना के गिरते हुए स्तर पर चिन्ता व्यक्त की है। आज का आलोचक अपने आप को सर्वज्ञ मान रहा है, जो एक साहित्यकार के लिए कठिन समस्या है। जब कोई नया लेखक किसी महान कृति की रचना करता है तो उसको बहुत सी ऐसी निकृष्ट रचनाओं का सामना करना पड़ता है, जिन कृतियों को उस युग के आलोचकगण सर्वश्रेष्ठ, महान एवं युगान्तकारी बताते हैं। ऐसे में नवीन कृति साहित्य में तत्काल अपनी सत्ता नहीं जमा पाती है। इस सम्बन्ध में लेखक छायावाद का उदाहरण देकर बताता है कि प्रारम्भ में जब काव्य–क्षेत्र में नयी भावधारा, नई शैली का रंग आदि का उदय हुआ तो उसे चारों ओर से भयंकर विरोध का सामना करना पड़ा, किन्तु छायावाद की प्रगति को रोकने में वे सर्वथा असमर्थ रहे। इसी प्रकार प्रगतिवाद के महत्व को स्वीकार करने में भी

---

1 'नए विचार नई दृष्टि' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 80

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

आलोचकगण अभी तैयार नहीं हैं। इस समय पेशेवर आलोचकों का दल भी काफी उछल–कूद मचा रहा है। वर्तमान आलोचना की इस गिरती हुई दशा के सम्बन्ध में लेखक का मत है कि आज के आलोचकों के पास आलोचना का कोई उच्च आदर्श नहीं है। इस सम्बन्ध में लिखते हैं– "हमारे आलोचकों में आत्मविश्वास की भावना को जगाने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। उनके मन में यह धारणा बद्धमूल करने की आवश्यकता है कि यदि वे सच्ची साधना के पथ को ग्रहण करें, आलोचना को व्यक्तिगत अथवा दलगत प्रचार का साधन मात्र न समझे, अन्तरानुभूत की गहनता से प्रेरित होकर व्यापक दृष्टि से काम लें, स्वाध्याय में रत रहकर साहित्य–सृष्टा की तरह जीवन के यथार्थ दृष्टा के पथ को अपनाएँ, तो उनकी आलोचनात्मक रचनाएँ निश्चय ही श्रेष्ठ सृजनात्मक साहित्य की श्रेणी में सगौरव स्थान पावेंगी।"[1] आलोचकगण पुस्तकगत अध्ययन की अपेक्षा यथार्थ साधना से प्रेरित होकर आलोचनाएँ लिखगें तो वे सफल हो सकते हैं। आलोचकों को अपने व्यक्तिगत व गुटबाजी संस्कारों से मुक्त होकर उच्चकोटि के सर्जनात्मक साहित्य का सृजन करना चाहिए। इसलिए वे साहित्यालोचकों को अपने उत्तरदायित्व को सही ढंग से निर्वाह करने पर बल देते हैं।

'अस्तित्ववाद का खोखलापन' निबन्ध में विख्यात फ्रांसीसी लेखक जा–पाल सार्त्र के अस्तित्ववादी विचारधारा का वर्णन किया है। सात्र इस अस्तित्ववाद का प्रेरक नहीं था इससे पूर्व डेनिश लेखक कीर्कगार्ड ने इस वाद का प्रचलन किया था। सात्र कीर्कगार्ड से प्रभावित हुआ और धीरे–धीरे उसने कीर्कगार्ड के मूल भावों को तोड़–मरोड़कर नये ढंग से उसकी व्याख्या करके उसको विस्तार देकर अनेक रूपों में उसको प्रचारित किया। सात्र ने अपने सर्जनात्मक कृतियों में यौन प्रवृत्तियों का खुलकर प्रदर्शन किया है। उसका यह प्रदर्शन सुधारात्मक न होकर जीवन की व्यर्थता को उजागर करता है।

---

1 'नए विचार नई दृष्टि' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 94

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

अस्तित्ववादियों ने भौतिकवादी दृष्टिकोण की अवज्ञा कर विशुद्ध आध्यात्मिक दृष्टिकोण को सत्य माना है। अन्त में लेखक लिखता हैं– "कुल मिलाकर अस्तित्ववाद खोखला वाद है। वह व्यक्ति के जीवन के प्रति एक नकारात्मक दृष्टिकोण है। सामूहिक चेतना के प्रति उदासीन रहने वाले अहंवादियों को कुछ समय के लिए इससे भले ही संतोष मिल जाय, पर अंततः यह उन्हें छिन्नमेघ की तरह भटकाकर ही छोड़ता है।"[1]

'हिन्दी नवलेखन' नामक निबन्ध के प्रारम्भ में ही लेखक लिखता है कि "प्रस्तुत निबन्ध में इस बात पर विचार करने का प्रयत्न किया गया है कि आज के नये युग की इस छटपटाहट की प्रक्रिया में कौन–कौन से महत्वपूर्ण नये प्रश्न जीवन और साहित्य के क्षेत्र में उभरकर, हमारे सामने आ रहे हैं। इन नये प्रश्नों का हल किन–किन रूपों में निकाला जा रहा है और इनके समाधान की नयी संभावित दिशायें क्या हो सकती हैं?"[2] उनके अनुसार आज के साहित्य का असाहित्यिक ठहराने का प्रयत्न किया जा रहा है। अ–कविता, अ–कहानी, अ–नाटक आदि लिखकर नये लेखक साहित्य को अ–साहित्य बनाने पर तुले हैं। यह सब साहित्य के नाम पर ही हो रहा है। इसको उन्होंने एन्टीसाहित्य कहा है। एन्टीसाहित्यवादियों के अनुसार अ–साहित्य में रस का अभाव है, लेकिन लेखक कहता हैं कि नवलेखक में किसी–न–किसी प्रकार की संवेदना पाई जाती है, जिसमें रस का होना स्वाभाविक है। इसलिए लेखक कहता है कि नवीन लेखक अपनी वैयक्तिक अनुभूति व संवेदना से प्रेरित होकर मौलिक सर्जन शक्ति का परिचय दें।

विविध : उपर्युक्त रचनाओं के अतिरिक्त इलाचन्द्र जोशी ने विविध विषयों पर लिखा। इनमें 'दैनिक जीवन और मनोविज्ञान', 'उपनिषदों की कथाएँ', 'गोर्की के

---

1 'नए विचार नई दृष्टि' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 130

2 'नए विचार नई दृष्टि' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 131

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

संस्मरण', 'इक्कीस विदेशी उपन्यासकार', 'महापुरूषों की प्रेम कथाएँ', 'सूदखोर की पत्नी' इत्यादि हैं। जिनमें से कुछ प्राप्य साहित्य का विवरण इस प्रकार है–

गोर्की के संस्मण : 'गोर्की के संस्मरण' में इलाचन्द्र जोशी ने गोर्की द्वारा लिपिबद्ध किये उन संस्मरणों का हिन्दी अनुवाद किया है, जिनमें असाधारण चरित्रों के असाधारण व्यवहार का चित्रण किया गया है। गोर्की जिन–जिन व्यक्तियों के सम्पर्क में आता था, उन व्यक्तियों की सूक्ष्म और साधारण से साधारण गतिविधियों का निरीक्षण करता था। इन कार्यो में वह सिद्धहस्त था। क्योंकि सामान्य आदमी जब किसी से मिलता है, तो उसकी सामान्य बातों में ही ध्यान देता है, लेकिन गोर्की के अन्दर इस प्रकार की प्रतिभा थी कि वह उन व्यक्तियों के अवचेतन मन में दबी पड़ी बातों को भी उनके द्वारा साधारण बातों व व्यवहारों के द्वारा अस्फुट संकेतों के रूप में, अनजान में व्यक्त हो पड़ती हैं, उनको जान लेता था। लेखक लिखता है– "गोर्की ने व्यक्तियों के जीवन के उन विरले क्षणों की तुच्छ से तुच्छ गतिविधि और साधारण से साधारण बातचीत को महत्व दिया है और ऐसे आश्चर्यजनक कौशल से उन्हें लिपिबद्ध किया है कि किसी भी घटना के वर्णन और वार्तालाप के उद्धरण के सिलसिले में उसने जिन–जिन व्यक्तियों के सम्बन्ध में अपने संस्मरण वर्तमान पुस्तक में संकलित किए हैं वे प्रायः सभी असाधारण चरित्र हैं, पर उन असाधारण चरित्रों का प्रस्फूटन उसने जिस प्रकार की तुच्छ गतिविधियों और साधारण वार्तालाप के वर्णन द्वारा किया है वह आश्चर्यजनक है।"[1]

प्रस्तुत पुस्तक में 24 संस्मरण संकलित हैं। इलाचन्द्र जोशी ने इन संस्मरणों के माध्यम से पाठकों को विभिन्न देशों के मानव स्वभाव की अनेक मूल बातों से अवगत कराया है। वे लिखते हैं– "मुझे पूरा विश्वास है कि इन रोचक संस्मरणों से केवल विगत युग के रूसी जीवन के सम्बन्ध में ही नहीं, बल्कि सब

---

1 'गोर्की के संस्मरण' : इलाचन्द्र जोशी, अनुवादक का वक्तव्य

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

देशों के और सब युगों के मानव स्वभाव की बहुत सी मूल का परिचय पाठकों को प्राप्त होगा।"[1]

महान प्रेमी और उनकी प्रेमिकाएँ : प्रस्तुत संकलन में इलाचन्द्र जोशी ने विश्व के महान व्यक्तियों के प्रेम सम्बन्धों का वर्णन किया है। विशुद्ध प्रेम को प्रदर्शित करने वाले इस संकलन में लेखक ने दिखाया है कि किस प्रकार प्रेम में बिना किसी भेद–भाव, ऊँच–नीच आदि की परवाह किये बिना मनुष्य एक–दूसरे की ओर प्रवृत्त होता है।

प्रथम प्रेमकथा 'अम्बपाली के महाप्रेमिक' में अम्बपाली नामक इतिहास–प्रसिद्ध वेश्या का महात्मा बुद्ध के प्रति उत्पन्न प्रेम का वर्णन किया है। वेश्या होने के बाद भी वह स्वाभाविक सहृदयता, सौजन्य, सुशीलता आदि गुणों से युक्त है। यह उसकी सुन्दरता, विद्वता व माधुर्य का ही आकर्षण है कि समस्त उत्तर भारत में उसकी ख्याति फैल गई। मगध देश के राजा बिंबसार ने भी उससे प्रणय सम्बन्ध बनाया। जब महात्मा बुद्ध वैशाली आते हैं, तो वह महात्मा बुद्ध की ओर आकर्षित होती है। वह बुद्ध को अपने यहाँ भोजन के लिए आमंत्रित करती है। महात्मा बुद्ध उसका आमन्त्रण स्वीकार करते हैं। इसके बाद वह अनेक बार अम्बपाली के यहाँ भोजन पर आते हैं। यहाँ तक कि लोग उनके चरित्र पर संदेह करने लगे। बुद्ध के वहाँ से जाने के बाद अम्बपाली भिक्षुणी बनकर उनके ध्यान में निमग्न रहने लगी। "बुद्ध के चले जाने पर अम्बपाली के हृदय में हाहाकार मचने लगा। भोग की एक एक सामग्री सहस्रों विच्छुओं के डंकों की ज्वाला की तरह जान पड़ने लगी। उसने अपने लाखों रूपयों की सम्पति बौद्ध मत के प्रचार के लिए दान कर दी और स्वयं भिक्षुणी बनकर अपने अनन्तकालीन प्रेमिक के ध्यान में दिन–रात मग्न रहने लगी।"[2]

---

1 'गोर्की के संस्मरण' : इलाचन्द्र जोशी, अनुवादक का वक्तव्य

2 'महान प्रेमी और उनकी प्रेमकथाएँ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 11

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

संकलन में संकलित 'चंडीदास की हरिजन प्रेमिका' नामक प्रेमकथा अत्यधिक मार्मिक है। चंडीदास धोबिन से प्रेम सम्बन्ध स्थापित करता हैं, जिसके कारण उसे समाज से प्रताड़ित होना पड़ता है, लेकिन चंडीदास और धोबिन रामी के प्रबल प्रेम की ही अन्त में विजय होती है। अन्त में समाज अस्पृश्य धोबन को स्पृश्या मानकर समाज में उसको उचित स्थान मिलता है। 'दास्ताएव्स्की का प्रेम जीवन' में विश्वविख्यात रूसी उपन्यासकार दास्ताएव्स्की व अन्ना की प्रेमकथा का वर्णन है। दास्ताएव्स्की से प्रभावित होकर अन्ना उससे प्रेम करने लगती है। दास्ताएव्स्की भी उसकी ओर आकर्षित होता है और उससे विवाह कर लेता है, जिसे पाकर वह मृत्यु पर्यन्त अपने को धन्य समझता रहा।

'श्रीमती एनी बीसेन्ट और बर्नार्ड शॉ' में दोनों के प्रेमजीवन पर प्रकाश डाला है। श्रीमती एनी बीसेन्ट गृहस्थ जीवन की संकीर्ण चहारदीवारी को तोड़–फोड़कर अपने पति और बच्चे को छोड़कर एक नवीन पथ पर चल पड़ी, जहाँ वह बनार्ड शॉ की ओर आकर्षित होती है। दोनों में घनिष्ठ प्रेम होता है, लेकिन एनीबीसेन्ट की कड़ी शर्तों के कारण वह शा के साथ पत्नी का जीवन नहीं बिता सकी। फलस्वरूप दोनों अलग हो गये। अन्त में एनीबीसेन्ट ने भारत आकर कर्मयोगिनी का जीवन बिताया। 'शरतचन्द्र का प्रेम जीवन' में प्रख्यात बंगला लेखक शरतचन्द्र के प्रेम का वर्णन किया है। किस प्रकार वह एक लड़की के सम्पर्क में आता है, उसका नाम बदलकर हिरण्यमयी रखता है और उससे विवाह करता है। हिरण्यमयी से विवाह के बाद सचमुच ही शरतचन्द्र का भाग्य चमक उठता है और साहित्य संसार में उसकी ख्याति फैल गयी। तभी से शरत की आर्थिक स्थिति अच्छी हो गयी। 'रूसों और उसके विचित्र प्रेम का इतिहास' में रूसों व मादाम के परस्पर प्रेम का चित्रण है। रूसों जो एक साधारण परिवार में जन्मा था, जन्म के समय ही जिसकी माँ की मृत्यु हो गयी थी, किस प्रकार वह मादाम द वारेंज के सम्पर्क में आता है और दोनों प्रथम मिलन में ही परस्पर एक–दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। इस सम्बन्ध में रूसों लिखता है– "जो लोग आत्माओं की पारस्परिक आकर्षण की सहजता पर अविश्वास करते हैं वे

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

मुझे बताएं कि मैं पहली ही दृष्टि से मादाम द वारेंज के प्रति इस तरह सहज ही आकर्षित और समर्पित क्यों हो गया, जैसे उसके साथ युगों से मेरा प्रेम–सम्बन्ध रहा हो? और मेरी ही तरह वह अपरिचित महिला भी मेरे प्रति पहले ही क्षण से प्रबल स्नेहाकर्षण का अनुभव क्यों करने लगी? केवल प्रेम या स्नेह के ही आकर्षण की बात नहीं कह रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि वह प्रेम था, दो हृदयों का पारस्परिक आकर्षण था। पर वह मोह नहीं था। प्रेम के प्रबल आकर्षण के साथ जो अशांति और जो तनाव उत्पन्न हो जाता उसका लेश भी मेरी उस अनुभूति में नहीं था। उसमें थी स्निग्ध शांति की सहज–सुखद संवेदना, जो मन के दुर्दमनीय आवेग को शांत करके उसे एक सहज और स्थायी आश्वास में बदल देती है।"[1] रूसों जीवन भर इधर–उधर भटकता रहा, लेकिन मादाम द वारेंज के प्रेम को वह भुला नहीं पाया क्योंकि वह जब भी मादाम के पास रहा मादाम ने अपना सर्वस्व उस पर न्यौछावर कर दिया था। इसके बाद जब मादाम विन्तसनरीड नामक युवक के सम्पर्क में आती है तो रूसों का मादाम के घर में रहना असंभव हो गया। फलस्वरूप वह उसे छोड़कर पेरिस चला जाता गया, जहाँ उसने अपने क्रान्तिकारी विचारों को 'एमील' और 'लेकोंत्रा सोशियल' (सामाजिक अनुबन्ध) में लिपिबद्ध किया। मादाम की वृद्धावस्था में वह मादाम से मिला और दोनों ने अपनी पुरानी यादों में आँसू गिरायें। रूसों ने मादाम की दयनीय आर्थिक स्थिति के कारण उसकी भरपूर सहायता की। उसके कुछ समय बाद ही मादाम की मृत्यु हो गई। इस प्रकार दोनों के प्रेम नाटक का अन्त हो गया।

'शैली और उसके प्रेम की आहुतियां' में महान कवि शैली का हैरियट एवं अन्य लड़कियों से प्रेम–सम्बन्ध का चित्रण किया गया है। प्रारम्भ में शैली हैरियट वेस्टब्रुक नाम की एक अत्यन्त सुन्दरी के सम्पर्क में आता है। हैरियट शैली की काव्य–प्रतिभा, सुन्दरता, विद्रोही प्रकृति और उसके व्यक्तित्व से उसकी

---

1 'महान प्रेमी और उनकी प्रेमकथाएँ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 112

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

ओर आकर्षित होती है। दोनों घर वालों के विरोध के कारण घर से भागकर एडिनबरा पहुँचते हैं और वहां एक पादरी को पकड़कर विवाह की रस्म–अदायगी कर लेते हैं। हैरियट के माँ बनने के बाद दोनों में ही अनबन होने लगती है। एलिजा के बहकावे में आकर हैरियट शैली को खो देती है। उसकी नासमझी के कारण वह क्षुब्ध हो गया। उसके मन में एक नया सन्देह उत्पन्न होने लगा कि हैरियट के गर्भ में जो बच्चा पल रहा है, उसका पिता वह नहीं है। हैरियट के मन में भी यह संदेह होने लगा कि शैली किसी दूसरी लड़की के प्रेम–जाल में फंस गया है और दुर्भाग्य से शैली एक दूसरी लड़की मेरी से प्रेम करने लगा। मेरी के बाद वह क्लेयर क्लेयरमांड से प्रेम करता है। इस प्रकार शैली ने अपने जीवनकाल में अनेक लड़कियों से सम्बन्ध बनाये। मृत्यु के बाद मेरी चाहती थी कि शैली की लाश को उसके बच्चे की कब्र के समीप दफनाया जाए। पर रोम में केनेन्टाइन लागू होने के कारण उसकी चिता सजाई गई। बायरन ने उसकी चिता को अपने हाथों से आग दी। 'रवीन्द्रनाथ' में रवीन्द्रनाथ और उनकी भाभी कादम्बरी के प्रेम का वर्णन किया है। प्रारम्भ में वह अन्ना की ओर आकर्षित होता है, जिसका वर्णन उसकी कविताओं मे मिलता है। उसके बाद वह अपनी समवयस्क भाभी की ओर आकर्षित होता है उनका प्रेम घनिष्ठ होता जाता है। रवीन्द्रनाथ के विवाह के बाद उसकी भाभी आत्महत्या कर लेती है। जिसका स्थायी प्रभाव उनके जीवन पर पड़ा। "किसी प्रियजन की मृत्यु पर ऐसा मार्मिक, गहरा और जीवनव्यापी प्रभाव संसार के अन्य किसी भी कवि पर शायद ही पड़ा होगा जैसा कादंबरी की आत्महत्या से रवीन्द्रनाथ पर पड़ा। वह अपनी महान से महान कृतियों में किसी न किसी बहाने उन्हें अपने जीवन के अन्त तक प्रायः प्रति वर्ष याद करते रहे। जो नारी उनके जीवन के सबसे महत्वपूर्ण युग– शैशव, किशोर और नवयौवन में निरन्तर चौदह वर्षों तक उनके व्यक्तित्व–निर्माण और काव्य–प्रतिभा के विकास का मूल प्रेरणा–स्रोत बनी रही, जो उनके साहित्यिक और सांस्कृतिक जीवन की सच्ची संगिनी, उनके प्रतिदिन के सुख–दुःख की आंतरिक साझीदार, सौन्दर्य और प्रेम के संबंध में उनकी आदर्श प्रतिमा, परम

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सहृदय सचिव, प्रतिदिन के कीड़ा–कौतुक और आमोद–प्रमोद की अनिवार्य संगिनी, परम हितैषिणी, अभिभाविका और ललित कलाओं की प्रियतमा शिष्या बनी रही, उसकी आकस्मिक मृत्यु (विवश मृत्यु नहीं, इच्छित आत्महत्या– और वह भी ठीक उनके विवाह के बाद!) उनके मर्म के भी मर्म में ऐसी चोट कर गई जिसकी कचोट से वह कभी उभर नहीं पाए।"[1] रवीन्द्र नाथ उन्हें प्रतिवर्ष किसी न किसी रूप में स्मरण करते रहे।

विजनवती : इलाचन्द्र जोशी का एकमात्र काव्य संग्रह 'विजनवती' है, जिसमें उनकी समस्त कविताएँ संकलित हैं। इसमें 'राजकुमार', 'विजनवती', 'दमयन्ती', 'नरक–निर्वासी', 'महाश्वेता', 'शकुन्तला', 'मायावती' आदि अनेक कविताएँ उनकी काव्य प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए काफी हैं, जिनमें उनके मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण की झलक भी मिलती है। यद्यपि उनकी सभी कविताएँ छायावाद की रचनाएँ हैं, लेकिन इलाचन्द्र जोशी ने स्वीकार किया है कि छायावाद की रचनाएँ होने के बाद भी वे छायावादी नहीं हैं। वे लिखते हैं– "मेरी कविताएँ छायावाद के युग की रचनाएँ हों पर ठीक छायावादी नहीं हैं। उनमें मैंने कुछ नये रस भरने का प्रयत्न किया है।"[2] 'विजनवती' में संकलित कुछ कविताओं पर उन्होंने स्वयं ही प्रकाश डाला है। 'राजकुमार' शीर्षक कविता के सम्बन्ध में वे लिखते हैं– "उक्त कविता में एक निर्मल, निष्कलुष तथा निर्लिप्त आत्मा के उन्मेष, विकास तथा ह्रास का मनोवैज्ञानिक वर्णन रूपक–रस की दृष्टि से किया गया है।"[3]

'दमयन्ती' कविता में दमयन्ती के विषादमय एवं करूण जीवन को चित्रित किया है। लेखक के अनुसार दमयन्ती लेखक की ही आदर्शमय स्वप्नों की छाया है– "दमयन्ती को जिन स्वप्नों की माया से मैंने दिलासा देना चाहा है वे स्वयं मेरे नाना अभिघातों से विताड़ित जीवन के नाना रसात्मक आदर्शमय

---

1 'महान प्रेमी और उनकी प्रेमकथाएँ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 190–191

2 'देखा–परखा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 29

3 'देखा–परखा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 29

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

स्वप्नों के रूपकात्मक रूप हैं।"[1] 'नरक निर्वासी' कविता के सम्बन्ध में इलाचन्द्र जोशी ने लिखा है– "'नरक–निर्वासी' में मैंने अपनी उस मनोवैज्ञानिक अवस्था का बीभत्स वर्णन किया है जबकि मेरी समस्त अन्तश्चेतना घोर अन्धकारमय गहन गह्वर की आतंकप्रद विभीषिका में परिपूर्ण रूप से निमज्जित थी। मैं पुण्य प्रकाश के लिए छटपटा रहा था।"[2] 'महाश्वेता' शीर्षक कविता बाणभट्ट की प्रमुख रचना 'कादम्बरी' के महाश्वेता चरित्र को आधार लेकर लिखी गयी है। इलाचन्द्र जोशी लिखते हैं– "इसमें मैंने विश्वनारी के मंगलमय रूप के विभिन्न स्वरूपों का विचित्र सम्मिश्रण रूपकात्मक ढंग से व्यंजित करने की चेष्टा की है। महत् त्याग, अविचल सहिष्णुता, उज्ज्वल श्री, विह्वल हवी, पवित्रता तथा प्रज्वलित वह्निसम दीप्त तेज का जो समन्वय कल्याणी या मातृजाति में वर्तमान है उसे मैंने महाश्वेता के रूपक में बाँधने का दुस्साहस किया है।"[3]

'शकुन्तला' शीर्षक कविता में लेखक ने कालिदास के नाटक में शकुन्तला के चरित्र की असहायावस्था का करूण चित्रण किया है। लेखक कविता के सम्बन्ध में लिखता है– "कालिदास की इस मानस–कन्या को मैं बहुत पहले अपनी आदर्श मानसी प्रतिमा के बतौर अपनी आत्मा के अन्तःपुर में प्रतिष्ठित कर चुका था और उसे अपने हृदय–राज्य की महिमा–मण्डित रानी मान चुका था। इसलिए पति–प्रवंचिता, आश्रम–परित्यक्ता, निर्वासिता नारी को उसकी चरम असहाय अवस्था में प्रदर्शित करके मैंने अपनी आत्मा में उसके प्रति अधिकाधिक समवेदना उभाड़नी चाही थी ताकि मैं उसकी स्वप्न–प्रसूत आत्मा को परिपूर्ण से अपनाकर उसे अपनी प्यारी 'ललिता' के तौर पर द्विधाहीन भाव से

---

1 'देखा–परखा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 34

2 'देखा–परखा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 34

3 'देखा–परखा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 34–35

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

ग्रहण कर संकू और युग–युग की महामहिम विश्वनारी के रूप में उसकी गौरव गाथा गा सकूं।"[1]

इस प्रकार इलाचन्द्र जोशी ने उपन्यास, कहानी, निबन्ध, समालोचना एवं काव्य सभी विधाओं में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने जहाँ उत्कृष्ट श्रेणी के उपन्यास लिखे वहीं विभिन्न प्रकार की कहानियाँ भी लिखी। विभिन्न तत्कालीन समस्याओं पर लेख व निबन्धों के माध्यम से अपने विचारों को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने विभिन्न विदेशी लेखकों पर अनेक लेख लिखे। दोस्ताएव्सकी की कहानियों का हिन्दी में अनुवाद भी किया। उनका एकमात्र काव्य संग्रह 'विजनवती' है, जिसमें उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से कुछ नवीन रस भरने का प्रयास किया है। जिनमें उनकी काव्य प्रतिभा के दर्शन होते हैं।

❖❖❖❖

1 'देखा–परखा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 35

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/